नादेज़्दा पतुश्किना

कोरोवा (गाय)

दो अंकों में एक हास्य नाटक जिसके बाद एक उपसंहार है

सावधानी: नाटक का कोई भी (व्यावसायिक, धर्मार्थ, पेशेवर, शौकिया) सार्वजनिक प्रदर्शन लेखक की अनुमति से ही संभव है। नाटक के प्रदर्शन के लिए, चाहे वह रूस में हो या विदेश में, पहले से अनुमति लेना आवश्यक है, इसके लिए लेखक से व्यक्तिगत रूप से <ptushkina@mail.ru पर संपर्क करें।

लेखक पाठ में कोई भी बदलाव, दृश्यों को छोटा करना या स्थान बदलना, पात्रों के नाम या उम्र बदलना, साथ ही नाटक का शीर्षक बदलने की अनुमति नहीं देता।

कॉपीराइट का उल्लंघन रूसी संघ के कानून और अंतरराष्ट्रीय कानून के मानदंडों के अनुसार दंडनीय है।

पात्र

कातेरिना (कात्या)

वादिम

गाय (बुर्योन्का)

नीना

नास्त्या (6 वर्ष)

अलेक्सांद्रा - कातेरिना की माँ

अलेक्सांद्र - उसका (अलेक्सांद्रा का) वर्तमान पति

रुस्लान - अलेक्सांद्र का भाई

एक पुरुष

एक महिला

पहला अंक

दो कमरों का एक फ्लैट। दरअसल, एक कमरा दिखता है, जो कुछ हद तक बैठक कक्ष (लिविंग रूम) जैसा है। और दूसरे कमरे, शयनकक्ष (बेडरूम) में, जो बैठक कक्ष से जुड़ा है, दरवाजे की जगह एक मेहराब (आर्च) है, जिसके अर्धवृत्त के आसपास प्लास्टर के कामदेव और छोटे देवदूत (एमोरिनो और एंजेलो) लगे हैं। मार्ग को हल्के कपड़े, धनुषों और चमकी (सिक्किन) से सजाया गया है। यह सब फैशन के हालिया रुझानों को श्रद्धांजलि है। और रसोईघर (किचन) – यह फैशन के रुझान को नहीं, बल्कि फैशन की चीख़ को श्रद्धांजलि है। यहाँ भी एक मेहराब है, लेकिन देवदूतों से नहीं, बल्कि अंगूरों, टमाटरों और अन्य फलों के गुच्छों से सजाया गया है – एक प्रकार की स्थिर जीवन (स्टिल लाइफ) वाली अर्ध-मेहराब। रसोई में एक क्लासिक अंडाकार मेज और उसके चारों ओर एक गोलाकार सोफा-बेंच है, लेकिन साथ ही, एक बार की तरह एक काउंटर (स्टॉल) भी है, और उसके पास दो ऊँची घूमने वाली स्टूल (बार स्टूल) हैं। सिंक, चूल्हा, रेफ्रिजरेटर, काटने की मेज, काउंटर – सब कुछ एक ही सख्त रेखा में है। खिड़कियों पर – बैठक कक्ष और रसोई दोनों में – ब्लाइंड्स हैं। यह चमकदार दिखता है और हल्की विडंबना को आमंत्रित करता है। लेकिन अश्लीलता का एहसास नहीं होता।

बैठक कक्ष से स्पष्ट है कि इस घर में लोग लंबे समय से रह रहे हैं, और उन्होंने इसे धीरे-धीरे, प्यार के साथ सजाया है। फर्नीचर और साज-सज्जा से, जैसे किसी पेड़ के तने के छल्लों या पुरातात्विक परतों से, कई वर्षों में मालिकों के जीवन का पता लगाया जा सकता

है। और, हालांकि फर्नीचर को शानदार ढंग से कढ़ाई किए गए कवर (कवर) के नीचे छिपा दिया गया है, यह स्पष्ट है कि यह पुराना, पुराने जमाने का है, लेकिन इतना नहीं कि रेट्रो (रीट्रो) कहा जा सके; संभवतः यह माता-पिता का था, और लगभग तीस साल पहले नवविवाहितों को विरासत में मिला था।

और जो अलमारी (साइडबोर्ड) है, वह सस्ती श्रेणी की है, उन्होंने खुद खरीदी थी, उस समय जब फर्नीचर के लिए सुबह जल्दी कतार में लगना पड़ता था।

अलमारी क्रिस्टल (क्रिस्टल) से भरी है; इसके संग्रह से पता चलता है कि क्रिस्टल ज्यादातर उपहार में मिला था; शायद घर की मालकिन एक शिक्षिका है: कई एक जैसे फूलदान, मूर्तियाँ, कई सेट गिलास, जो शैली में बिल्कुल भिन्न और एक एकीकृत थाली सज्जा (टेबल सेटिंग) में असंगत हैं।

कॉफी टेबल (कॉफी टेबल), जो पहले से ही महंगी है; दस साल पहले, यह यदि फैशन का अंतिम शब्द नहीं था, तो निश्चित रूप से उससे पहले का शब्द था।

लेकिन उस पर रखा टेलीफोन सेट – फैशन के प्रति एक प्रदर्शनकारी बलिदान है। कुछ काल्पनिक आकार का, भारी, सुनहरा और जड़ाऊ (इंक्रस्टेड), जिसमें किसी ऐसी प्राचीन वस्तु की शैली बनाने का दावा है, जो कभी अस्तित्व में नहीं थी और न ही कभी ऐसा कुछ बनाया था। यह भड़कीला फोन स्पष्ट रूप से चौंकाने के लिए रखा गया है।

शायद, यहाँ लोग खुद पर हँसना और अपने दुर्लभ, लेकिन पुराने परिचितों, मेहमानों का मनोरंजन करना पसंद करते हैं। क्योंकि इस थोड़ी अजीब अपार्टमेंट में कुछ ऐसा झलकता है, जिससे पता चलता है कि इसे दूसरों की प्रशंसा या ईर्ष्या के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए, इसलिए सजाया गया था ताकि किसी को एक-दूसरे के साथ यहाँ अच्छा लगे। जैसे एक माँ, जो अपनी संतान से प्यार करती है, उसके कमरे को अजीबोगरीब चीज़ों से सजाती है, इस अचेतन इच्छा के साथ कि वह उस कमरे में मुस्कान और आराम के साथ रहे। आखिर आराम तो वहाँ है, जहाँ आपसे बहुत प्यार किया जाता है।

इस अपार्टमेंट के बारे में मालिकों के बारे में और क्या कहा जा सकता है? उनकी समृद्धि लगातार बढ़ी; कुछ समय पहले वे तथाकथित मध्यम बुद्धिजीवी वर्ग (साधारण इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि) से एक नए सामाजिक स्तर पर आ गए। उन्हें "नए रूसी" (न्यू रशियन) नहीं कहा जा सकता, लेकिन, निस्संदेह, वे उनके साथ एक सामान्य वातावरण में हैं और, विडंबना के बिना नहीं, फिर भी उन्होंने कुछ रोजमर्रा के (और केवल रोजमर्रा के ही नहीं) मानदंड अपना लिए हैं। इस अपार्टमेंट में कभी बच्चे नहीं रहे होंगे।

यहाँ दो लोग रहते हैं; जिस तरह से सब कुछ व्यवस्थित है, तीसरा यहाँ स्पष्ट रूप से अतिरिक्त है।

और तीन लोगों के साथ इतनी लक्ज़री-होटल जैसी सफाई बनाए रखना असंभव है। ये दोनों एक-दूसरे पर बोझ नहीं हैं और स्पष्ट रूप से विनम्र होना जानते हैं; इसलिए, अपार्टमेंट में कोई दरवाजे नहीं हैं। मालिकों को एक-दूसरे से शारीरिक रूप से अलग होने की आवश्यकता नहीं है; इसका मतलब है कि वे एक-दूसरे की स्वतंत्रता और शांति का सम्मान करना जानते हैं।

सर्दी। रात। बाहर, प्रवेश द्वार (एंट्रेंस) का एक हिस्सा दिखता है, दाईं ओर पड़ोसी के अपार्टमेंट का दरवाजा, सड़क का दरवाजा, एक स्ट्रीट लैंप, बर्फ के ढेर (स्नोड्रिफ्ट) और बर्फ़ीला तूफ़ान (ब्लिज़ार्ड) दिखता है।

लेकिन इस अपार्टमेंट के मालिक, जो ऊँची पहली मंजिल पर स्थित है, सोए नहीं हैं। वे बहुत समय से विवाहित जोड़े हैं। दोनों पचास से अधिक के हैं।

और अभी वे दहलीज पर, अपने अपार्टमेंट के अंदर खड़े हैं।

कातेरिना (कात्या), एक आरामदायक घरेलू लबादे (हाउसकोट) में; लाल पृष्ठभूमि पर नीले कॉर्नफ्लॉवर और पीली तितलियाँ (गोभी की तितलियाँ) हैं। जिस तरह से यह एक चौड़ी पीली बेल्ट से बंधा है, उससे स्पष्ट है कि वह इसे रोजाना पहनती है; सबसे अधिक संभावना है – यह उसके पति का उपहार है।

और वादिम। वह आधा चमड़े का कोट (डब्ल्योंका) पहने हुए है, टोपी अभी अपने हाथ में पकड़े हुए है। उसके पैरों के पास एक काफी साधारण सूटकेस है, बहुत-बहुत पुराना। ऐसे सूटकेस के साथ कोई यात्रा पर नहीं जाता; उसमें लोग मेज़ानाइन (अटारी में) पर मौसमी या बेकार चीज़ें रखते हैं; उसमें कुछ दचा (ग्रीष्मकालीन घर) में ले जाते हैं या बस एक घर से दूसरे घर में सामान ट्रांसफर करते हैं। वादिम के हाथों में दो गिलास हैं।

वादिम: चलो इस बात पर पीते हैं कि हम हमेशा के लिए एक-दूसरे के उतने ही करीब रहें, जितने पूरी जिंदगी थे!

कात्या: (सूटकेस को देर तक देखती है, फिर रुंधे गले से) इसी सूटकेस के साथ तुम तब मेरे पास वोलोग्दा आए थे...

वादिम: हाँ?..

कात्या: याद है?

वादिम: हाँ। याद है। (ठहराव) शादी का प्रस्ताव रखा था। (गिलास उठाता है) तुम्हारे लिए!

कात्या: चलो, सफर से पहले कुछ देर बैठते हैं! (बैठ जाती है।)

बाईं ओर की दीवार के पार, जाहिर तौर पर पड़ोसी के अपार्टमेंट से, चेलो (वायलनसेलो) बजने लगता है। कोई कुछ सीख रहा है, क्योंकि एक मार्मिक-उदास धुन लगभग तुरंत लड़खड़ा जाती है, और अदृश्य चेलो वादक फिर से शुरू करता है।

वादिम: (यांत्रिक रूप से अपना सिर संगीत की ओर घुमाता है, फिर यांत्रिक रूप से अपनी कलाई पर, घड़ी की ओर देखता है) वाह! पगनिनी बनना चाहता है!

कात्या: पगनिनी वायलिन वादक था। और यह – चेलो है!

वादिम: (कुछ देर तक संगीत सुनता हुआ सा) काफी समय से नहीं सुना। उसे, लगता है, प्रगति हुई है?

कात्या जवाब नहीं देती।

वादिम: तुम्हारे लिए! हमारे लिए! (एक घूंट में पी जाता है) चेलो ने मुझे याद दिलाया कि मैं तो बंदूक भी साथ लेना चाहता था!

कात्या: सूटकेस... सूटकेस... कितने साल, कितनी सर्दियाँ... अजीब...

वादिम: क्या अजीब है?

कात्या: हाँ, यह सूटकेस... इसके साथ आए थे, इसके साथ जा रहे हो...

वादिम: मैं सूटकेस वापस लौटा दूंगा।

कात्या: (आश्चर्यचकित) सूटकेस?

वादिम: माफ करना। (जल्दी से शयनकक्ष में जाता है और बंदूक लेकर वापस आता है) हाँ, ये रही...

कात्या: उसका कवर (केस) ड्रेसर (कोमोड) में है, दूसरी दराज में।

वादिम: (बंदूक को दीवार के सहारे टिका देता है) और कारतूस! (फिर से शयनकक्ष में गायब हो जाता है)

कात्या: (सूटकेस से) बस अभी, बस अभी... अभी वह तुम्हें उठाएगा और चला जाएगा... खालीपन... खालीपन...

वादिम: (वापस आता है) कारतूस – ये रहे, पर कवर नहीं मिला।

कात्या कवर लेने जाने को होती है।

वादिम: (उसे रोकता है) जल्दी नहीं है। किसी और समय।

कात्या: मैं – जल्दी करूँगी। मुझे सब याद है, सब पता है, क्या कहाँ है...

वादिम: (स्पष्ट रूप से कुछ और सोच रहा है) क्या – जल्दी?

कात्या: कवर!

वादिम: (सोच से बाहर आता है) कैसा कवर?

कात्या: (रुक जाती है) मुझे यह पसंद नहीं है, मुझे यह पसंद नहीं है कि सब कुछ ऐसे... सब कुछ ठीक है... तुम्हारा शुक्रिया!

वादिम: किस लिए? अजीब – रात में – चेलो पर!

कात्या: (ध्यान से समझाते हुए) मैं खुश थी... समझते हो?

वादिम: समझता हूँ।

कात्या: (सिर हिलाती है) नहीं समझते... मैं तुम्हारे साथ खुश थी... तुम्हारी वजह से... क्योंकि ऐसा हुआ... मेरी पूरी जिंदगी तुम मेरे साथ रहे... जब मैं चार साल की थी... तुम्हें यह याद नहीं, तुम मुझसे छोटे हो, तब तुम तीन साल के थे... इसलिए, तुम्हें याद नहीं...

वादिम: (चोरी से अपनी घड़ी पर नज़र डाली) तुमने बताया था, मुझे याद है।

कात्या: बताया था... और तब से... तब से, हर घंटे, हर पल तुम हो... मुझे कम नंबर मिलते, अच्छे नंबर मिलते, दोस्तों से लड़ती, माँ से नाराज़ होती और रोती, कॉलेज में दाखिला लेती, वोलोग्दा में नियुक्ति पर पढ़ाती, लेकिन... इन सबके ऊपर हमेशा तुम होते... जैसे, आकाश... मेरी खुशी आकाश की तरह थी... कोई आकाश की ओर देखना, उस पर ध्यान न देना भी चुन सकता है, लेकिन तुम्हें यकीन है – वह है... मैं तुम्हारे साथ इतनी खुश थी... इतनी... इसी खुशी को लेकर तुम मुझसे जा रहे हो! मुझ पर तरस मत खाओ, अपने बारे में सोचो, प्यारे, अपने बारे में सोचो... मैं चाहती हूँ, मैं अपनी आत्मा की पूरी शक्ति से चाहती हूँ कि तुम खुश रहो... तुम्हारे लिए! (एक घूंट में पी जाती है)

वादिम: (ईमानदारी से) मैं तुम्हारे साथ बहुत खुश था! और... बेशक... मैं पैसे दूंगा...

कात्या: पैसे?..

वादिम: बुरा लगा कि मैंने पैसे की बात की... है न?

कात्या: क्यों नहीं? इसमें बुरा क्या है? मुख्य बात, तुम सही हो... प्यार – यह... प्यार की खातिर...

वादिम: फ्लैट के बारे में... तुम्हें कोई संदेह नहीं होना चाहिए... अब यह फ्लैट पूरी तरह तुम्हारा है...

कात्या: धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद... धन्यवाद... मेरे लिए अभी कहीं और जाना मुश्किल होता...

वादिम: हमारी तस्वीरें तुम्हारे पास ही रहने दो... और तुम तो मेरे माता-पिता के पास भी आती ही रहोगी... मेरे साथ? तुम यह सब समझती हो... कब्रिस्तान के बारे में, वहाँ क्या करना है, कब, कैसे... और वहाँ, उनकी कब्रों के पास, हमने तुम्हारे और मेरे लिए भी जगह खरीदी थी... अब, क्या होगा? मैं कुछ गलत कह रहा हूँ... मैं कुछ मुख्य कहना चाहता हूँ... पर मुख्य क्या है? (सोचा) यह वायलिन (स्क्रिपका) मुझे भटका रहा है... लगता है, अब बस... तो फिर मैं चलूँ?

कात्या: जाओ! तुम्हारा इंतज़ार है।

वादिम: उसे कोई आपत्ति नहीं कि मैं...

कात्या: फिर भी, उसे शायद पसंद न आए...

वादिम: नहीं, उसे कोई आपत्ति नहीं है!

कात्या: अच्छा, फिर भी वह बीस साल की है...

वादिम: बात यह नहीं है कि वह बीस साल की है, और तुम... (चुप हो जाता है)

कात्या: तिरपन साल की...

वादिम: मैं कभी तुम्हें नहीं छोड़ता... लेकिन... मैं तुम्हें बताना नहीं चाहता था, लेकिन तुम्हें पता तो चलेगा ही... वह बच्चे की उम्मीद कर रही है...

कात्या: (आश्चर्य से) किससे?

वादिम: (हाथ फैलाता है) बस अपने आप को दोषी मत समझो।

कात्या: मैं?

वादिम: कि हमारे बच्चे नहीं हुए।

कात्या: मैं तुम्हें बधाई देती हूँ! मैं तुम्हारे लिए खुश हूँ!

वादिम: (प्रसन्न होकर) हाँ? तुम एक मजबूत महिला हो! और वह – इतनी असहाय है... तुम समझती हो, है न?

कात्या: मैं सब समझती हूँ। हाँ। समझती हूँ। सब समझती हूँ। अलविदा!

वादिम: शुभ रात्रि, कात्या! (सूटकेस उठाता है, टोपी पहनता है, दरवाजा खोलता है) इस... से सिर दर्द हो गया। और तुम्हें?

कात्या: मुझे? नहीं। कभी-कभी मुझे लगता है कि वह (पड़ोसी) अपने धनुष (गज़) से मेरे दिल पर साज़ (बो) चला रहा है।

वादिम: (दृढ़ता से) बस। चला गया!

कात्या: मैं गाड़ी तक छोड़ने आती हूँ। हमारे जीप (डज़िपु) को 'अलविदा' कहूँगी!

वे अपार्टमेंट से बाहर निकलते हैं, सीढ़ियाँ उतरते हैं; वादिम सूटकेस के साथ आगे, कात्या उसके पीछे। बंदूक वादिम अपार्टमेंट में ही भूल गया था।

वादिम: (रुकता है) घर जाओ! ड्राफ्ट (हवा के झोंके) हैं, सर्दी लग जाएगी!

कात्या: मेरा लबादा तुम्हारे चमड़े के कोट से ज़्यादा गर्म है! तुम्हारा उपहार है। कभी-कभी मुझे लगता है, यह लबादा नहीं, बल्कि मेरी अपनी त्वचा है।

वहाँ, चेलो पर, फिर से वे भटक गए और फिर से शुरू किया।

वादिम सूटकेस रखता है, प्रवेश द्वार का दरवाजा खोलता है और बाहर जाता है। कात्या खड़ी है, दरवाजा पकड़े हुए, लबादे में अच्छी तरह लिपटी हुई और सड़क की ओर देख रही है।

कात्या: शाम से कितनी बर्फ गिरी है! जीप कहाँ है? कू-कू (कोयल की आवाज़)! पूरी तरह बर्फ के नीचे!

(कुछ देखा और तन गई) वाद्या! वादेच्का! देखो तो – पहियों के नीचे कुछ है! किसी को बर्फ ने ढाँप दिया है! देखो... भगवान न करे कुछ...

वहाँ वादिम हेडलाइट जलाता है। रोशनी प्रवेश द्वार तक पहुँचती है। परछाइयाँ अजीब हो जाती हैं। इससे जो हो रहा है उसका एक काल्पनिक, अवास्तविक प्रभाव पैदा होता है।

कात्या: वहाँ किसे बर्फ ने ढाँप दिया है? क्या वह ज़िंदा है? कोई शराबी होगा?

वादिम की आवाज़: अगर शराबी है भी, तो कोई सामान्य नहीं, बल्कि सींगों वाला है!

कात्या: कैसे सींग? (प्रवेश द्वार छोड़ती है और उस दिशा में जाती है जहाँ से वादिम की आवाज़ आ रही है, जीप की ओर)

इसके बाद, अगर हम उन्हें देखते भी हैं, तो धुंधले और टुकड़ों में। केवल उनकी आवाज़ें बर्फ़ीले तूफ़ान की आवाज़ के बीच स्पष्ट सुनाई देती हैं।

कात्या: ओह! यह क्या है?

वादिम: बर्फ हाथों से मत हटाओ! दस्ताने पहनो!

कात्या: बर्फ की वजह से पहचान नहीं पा रही! यह एक मूस (एल्क) है! वादिक, बेशक – मूस है! क्या यह ज़िंदा है?

वादिम: पास मत जाओ! वरना सींग मार देगा, फिर पता चल जाएगा ज़िंदा है या नहीं। कात्या, कहा न गाड़ी के पीछे खड़ी हो जाओ, तुमने तो चप्पल पहनी हैं... यह कोई मूस नहीं है!

कात्या: तो कौन है?

वादिम: कोई नहीं! मूस नहीं! बिल्कुल कोई समानता नहीं! गाय है!

कात्या: गाय?! सच में, गाय है! नहीं, मुझे यह सपना लग रहा है!

वादिम: पास मत जाओ! जैसे ही सींग मारेगी, पल भर में होश आ जाएगा! घर जाओ! बस इतना कमी थी कि आधी रात को, बुलेवार्ड रिंग (रिंग रोड) के पास, एक गाय तुम्हें सींग

मारे! मैं चारों ओर से निकल जाऊँगा! यहाँ उतना मुश्किल नहीं है! अरे, तुम उससे क्यों चिपकी हो?

कात्या: (हतप्रभ होकर) वह साँस ले रही है, वाद्या! वह ज़िंदा है!

वादिम: (निष्कर्ष निकालता है) यह ज़्यादा देर नहीं टिकेगी। जल्दी जम जाएगी!

कात्या: अरे, बुर्योन्का (गाय का नाम), सो मत, जम जाएगी!

वादिम: पशु चिकित्सालय (वेटेरिनार्कु) में फोन करो...

कात्या: बुर्योन्का, चलो! लेटना नहीं चाहिए!

वादिम: क्या कर रही हो?

कात्या: मदद करो! मैं उठा नहीं पाऊँगी! उनमें, गायों में, कम से कम पाँच सौ किलो तो होता ही है...

वादिम: क्यों? फोन करो! हो सकता है, उन्हें बूचड़खाने (बॉयनी) ले जा रहे थे, यह तो कहीं पास में ही है, लगता है, तगान्का (मॉस्को का एक इलाका) पर! मेरी चिंता मत करो! मैं चारों ओर से निकल जाऊँगा! और मुझे, सच में, अब जाना चाहिए! वह (युवती) नर्वस हो जाएगी...

कात्या: बूचड़खाने? तुम मदद करो और चले जाओ!

वादिम: किस चीज़ में मदद करूँ?

कात्या: पैरों पर खड़ा करना है।

वादिम: किसे?

कात्या: गाय को!

वादिम: क्यों?

कात्या: ले जाना है?

वादिम: कहाँ?

कात्या: फ्लैट तक, कम से कम अभी के लिए...

वादिम: तुम इसे फ्लैट में घुसेड़ने जा रही हो?!

कात्या: वाद्या, मरेगी तो नहीं न? वह जीना चाहती है!

वादिम: पागल हो गई? क्या बेतुकापन है – फ्लैट में गाय! और यह कहाँ से आ गिरी?

कात्या: और क्या पता, शायद भगवान ने उसे यहीं, अभी, मेरे पागल न होने के लिए भेजा हो... बस फ्लैट में खींचने में मदद करो, फिर मैं तुम्हारे बिना भी संभाल लूँगी!

फिर से, वही, उसी अपार्टमेंट में। उतना ही समय बीता है जितना तीन सौ किलो की गाय को शयनकक्ष तक खींचने में लगा होगा। दरवाजा खुला है। शयनकक्ष के मेहराब पर लगा पर्दा (ज़नावेस्का) हटा दिया गया है और ऊपर उठा दिया गया है ताकि प्रवेश मार्ग खाली हो। फोन वाली मेज को हटा दिया गया है ताकि गाय को अंदर ले जाया जा सके। कुर्सियाँ भी हटा दी गई हैं। वादिम सीधे टोपी पहने हुए बैठक कक्ष के बीच में खड़ा है। कात्या उसी लबादे में – पड़ोसी के अपार्टमेंट के दरवाजे के सामने है।

वादिम: (हताश होकर) रात के दो बजे हैं...

कात्या: उसने हिप्पोक्रेट्स की शपथ ली है।

वादिम: ली है, पर गायों के लिए नहीं।

कात्या: क्या फर्क पड़ता है? गायें, लोग... किसके लिए घंटी बजती है? (घंटी? - यहाँ "किसके लिए घंटी बजती है" कहावत का अर्थ है कि हर किसी की मृत्यु का समय आता है) याद है? हम में से हर एक के लिए। (डोरबेल बजाती है)

वादिम: (उदास होकर) रात के दो बजे कैसी घंटी?... क्या मुझे अब भी तुम्हारी ज़रूरत है?

कात्या: पता नहीं।

वादिम: तो फिर मैं जाता हूँ। (और जाता नहीं है) वहाँ बच्चा सो रहा है, कात्या!

और तभी पड़ोसी के दरवाजे के पीछे से एक बच्चे की आवाज़ आती है: "कौन है? डाकू तो नहीं?"

वादिम बैठक कक्ष में लौटता है और बेचैनी से इधर-उधर टहलता है।

कात्या: डाकू नहीं!

बच्चे की आवाज़: (निराश होकर) अरे, फिर से डाकू नहीं! ठीक है, मैं ही खोल देती हूँ!

कात्या: मैंने तुम्हें जगा दिया, नास्तेंका? क्या तुम्हारी माँ सो रही है?

नास्त्या: (दरवाजा खोलती है) हमारे यहाँ तो कोई, जो भी हो, सोता नहीं है। माँ अंकल सेर्योज़ा (सर्गेई) को चूम रही हैं। और मैं झाँक रही हूँ।

नीना: (चादर में लिपटी हुई, दरवाजे के पास आती है, नास्त्या को हल्का थप्पड़ मारती है) तुम्हें किसने रात को दरवाजे खोलने की इजाज़त दी? अपने कमरे में जाओ! और पाँच मिनट में गहरी नींद सो जाओ! मैं चेक करूँगी, फिर तुम्हारी खैर नहीं!

नास्त्या बिल्कुल प्रतिक्रिया नहीं देती, वह सब कुछ जानने के लिए दृढ़ है।

नीना: (कात्या से) भगवान का शुक्र है, तुम हो! वरना यह किसी को भी खोल देती! मैं सिखाती हूँ, सिखाती हूँ इसे... (नास्त्या से) चुप, यहाँ से, कहा तो!

नास्त्या आदेश पर ध्यान नहीं देती।

नीना: (कात्या से) हुआ क्या?

कात्या: (वास्तव में, उसे बहुत अजीब लग रहा है) मुझे माफ कर दो, भगवान के लिए! तुम्हारी एक डॉक्टर के रूप में तुरंत ज़रूरत है! मैं नहीं करती, लेकिन... रुकना नहीं चाहिए, एक पल भी नहीं गँवाना चाहिए... जीवन सचमुच बुझ रहा है...

नीना: (हाथ पटकती है, चादर गिर जाती है, वह मुश्किल से उसे पकड़ पाती है) हे भगवान! मुझे यही डर था! कात्या, कातेंका, तुमने क्या कर डाला?!

कात्या: जल्दी हमारे पास चलो! सीढ़ियों पर बात करने का कोई फायदा नहीं... तुम्हारी तुरंत मदद चाहिए...

नीना: अभी, अभी... (नास्त्या पर चिल्लाती है) क्यों अब भी पाँव के नीचे घूम रही हो? भागो, बिस्तर पर!

नास्त्या: (तर्कपूर्ण स्वर में) और अब, वही बात, लेकिन शालीनता और विनम्रता से।

नीना: (नम्रता से) कृपया सो जाओ। कात्या आंटी के साथ मुसीबत है! हस्तक्षेप मत करो! (कात्या से) मैं आई जा रही हूँ! (अपने फ्लैट में गायब हो जाती है)

नास्त्या: (कात्या से) और आप रोएँगी या सब कुछ अपने अंदर ही रखेंगी?

कात्या: (प्यार से नास्त्या के सिर पर हाथ फेरती है) मैं इस बारे में बाद में सोचूँगी।

नास्त्या: रोना बेहतर है! ज़ोर से-ज़ोर से! ताकि सबको तरस आए!

वादिम: (शयनकक्ष में झाँका, गहरी साँस ली और सीढ़ियों पर निकला) कात्या, तुम्हारी इस पालतू गाय ने इतना गंदा कर दिया है... अब कालीन की परेशानी...

कात्या हाथ हिलाकर टाल देती है। वादिम बैठक कक्ष में लौटता है और सोफे पर लेट जाता है। उसकी पूरी मुद्रा कहती है: अच्छा, इस बेवकूफी को देखते हैं, मैं तो हाथ खड़े करता हूँ।

नीना: (पहले से ही जींस, स्वेटर और डॉक्टर के बैग (साक्वोयाज़) के साथ) तैयार हूँ। (कात्या को सहानुभूति से देखती है) क्या जीवन के कोई लक्षण हैं?

कात्या: बहुत कमज़ोर।

नीना: तुमने उसे किस चीज़ से मारा? हाय, मुझे इसी का डर था, मुझे इसी का डर था!

वादिम: (बैठ जाता है) तुम्हें किस बात का डर था?

नीना: तुम ज़िंदा हो? कितना डरावना!

वादिम: और क्या – कोई दूसरा विकल्प संभव है?

नीना: मैंने सोचा, कात्या ने तुम्हें मार डाला!

वादिम: (व्यंग्यात्मक रूप से) क्या हत्या की योजना थी?

नीना: क्या बात कर रहे हो? अपनी कात्या को नहीं जानते! वह किसी मक्खी को भी नुकसान नहीं पहुँचा सकती!

वादिम: और यह मक्खी, जिसे कात्या नुकसान नहीं पहुँचा सकती, हमारे शयनकक्ष में है! स्वागत है, ऐबोलिट (बच्चों की किताब का डॉक्टर)!

नीना: तुम्हारे यहाँ क्या है?

वादिम: मदर टेरेसा, मानवता के रास्ते पर चलो! और मुझे अब जाना है! हे भगवान, ऐसा कर कि मेरे पहियों के नीचे कोई ऊँट न आ जाए!

कात्या: (वादिम से) मत जाओ! तुम्हारी ज़रूरत पड़ सकती है!

वादिम: सही है। हम इसे वापस ले जाएँगे! लेकिन, अब मुर्दा! यह और भारी होता है। लेकिन हम और भी हो गए हैं।

नीना: (डरते-डरते शयनकक्ष में झाँकती है और उछल पड़ती है) हाय! हाय! यह क्या है?

नास्त्या: (तुरंत वहाँ आ जाती है) माँ, क्या? (देखती है, ताली बजाती है) गाय! परी कथा से! चित्र (कार्टून) से!

नीना: क्यों? कहाँ से मिली?

वादिम: जहाँ से मिली, वहाँ खत्म हो गईं। किस्मत अच्छी थी – आखिरी पकड़ ली!

नास्त्या तुरंत शयनकक्ष में घुस जाती है।

नीना: (नास्त्या से) गाय को मत छुओ!

नास्त्या: (शयनकक्ष से) मैं नहीं छू रही, मैं सुन रही हूँ। वह कहती है: "लाल बालों वाली कन्या, मेरे एक कान में घुस जा, और दूसरे से निकल, और ठीक हो जा।"

नीना: (शयनकक्ष में प्रवेश करती है) मैं तुझे घुसाऊँगी! हट!

कात्या: (मेहराब में) क्या वह बच जाएगी? मुझे डर लग रहा है। कहीं अभी मर न जाए?

वादिम: यह हम सबके लिए एक त्रासदी होगी!

नास्त्या: (चिल्लाती है) मैं नहीं चाहती! नहीं चाहती! माँ, उसे मरने मत दो! मैं रोऊँगी! ज़ोर से-ज़ोर से!

नीना: अभी कोई मरने वाला नहीं है! मैं उसकी जाँच करने की कोशिश करूँगी। वह तुम्हारे यहाँ इतनी गंदी क्यों है? उसे धोना चाहिए... मुझे संदेह है कि वह वास्तव में सफ़ेद है...

वादिम: तभी तो जकूज़ी (गर्म पानी का टब) काम आई! (कात्या से) अगर मैंने तुम्हें मना न किया होता तो तुम गाय कहाँ धोती? और हमारे पास साधारण बाथटब (वाना) होता?

नीना: और जकूज़ी में भी नहीं समाएगी। तुम बस उसे बाथरूम में घसीट लो, और सीधे फर्श पर शावर (डज़ुशा) से पानी डालना... पहली मंज़िल है, किसी को पानी नहीं भरेगा!

वादिम: सफ़ेद गाय का स्नान! मैंने जीवनभर इसी का सपना देखा था! जाहिर है, पूर्वजों, प्राचीन स्लावों का आह्वान है!

नीना: आँखें आधी खुली हैं। पुतली पर कोई प्रतिक्रिया नहीं। अंगों में संवेदनशीलता नहीं। नाड़ी... गाय की नाड़ी कहाँ होती है?

वादिम: और मुझे यह कैसे समझाना है कि मैं आधी रात को वापस आ रहा हूँ? क्या कहूँ, गाय की नाड़ी ढूँढ़ रहा था?

नीना: चलो, गले की नस (यारेम्नुयु वेनु) देखें... नहीं, बेहतर है यहाँ, मुँह के किनारे पर... ठीक है... नाड़ी है।

वादिम: जीने के लिए, क्या गाय के लिए सिर्फ नाड़ी का होना काफी है, या और कुछ चाहिए?

नीना: (बाहर आती है) प्री-कोमा (कोमा से पहले की) अवस्था।

कात्या: जीवित रहेगी?

वादिम: कितनी देर टिकेगी? काश वह जल्दी तय कर ले, जीना है या मरना है।

नीना: मरने की ज़रूरत क्यों है? मरना नहीं चाहिए! (बैग खोलती है) अभी इंट्रावीनस (शिरा के माध्यम से) इंजेक्शन देती हूँ। नास्त्या, हमारे घर भागो, सेर्योज़ा से कहो कि मैं आधे घंटे में आऊँगी।

नास्त्या भाग जाती है।

नीना: क्या इंजेक्ट करूँ? कार्डियोमिन (Cardiomin) या सल्फोकैफोकेन (Sulfocamphocaine)?

वादिम: क्या यह एक अलंकारिक प्रश्न है, या आप उत्तर की उम्मीद कर रही हैं?

नीना: (सिरिंज में दवा खींचती है) ठीक है... सोचते हैं। अगर बिल्ली को मैंने शून्य दशमलव दो मिलीलीटर दिया था, तो गाय को तो पूरे दो मिलीलीटर आराम से दिए जा सकते हैं!

नास्त्या: (वापस आती है) और अंकल सेर्योज़ा सो गए! रॉबिन्सन क्रूसो की तरह! पूरी तरह नंगे! कितना मज़ाकिया! कोई नहीं सो रहा! सिर्फ अंकल सेर्योज़ा सो रहे हैं! सब कुछ सोएगा! वह सोचता है, यहाँ सिर्फ एक कुत्ता (कबेल - नर कुत्ता, यहाँ प्रेमी के लिए अपशब्द) है, और अब यहाँ एक गाय भी आ गई है!

वादिम: कैसा कुत्ता?

नीना: (बात टालती है) शुरू करने के लिए, फिर भी इंट्रामस्क्युलर (मांसपेशी में) इंजेक्शन की कोशिश करते हैं...

वादिम: कैसा कुत्ता? मैं समझा नहीं...

नीना: नास्त्या, बाहर जाओ! उसकी बातों पर ध्यान मत दो, वह नींद में है!

नास्त्या: बिल्कुल नींद में नहीं हूँ!

वादिम: (मीठे स्वर में) नास्तेंका, तुम्हारी माँ कैसे कहती है: कुत्ता या बूढ़ा कुत्ता?

नास्त्या: मैं नींद में हूँ।

वादिम: जवाब दोगी तो गाय तुम्हें उपहार में दूँगा! उसकी क्या ज़रूरत? एक बूढ़ा कुत्ता भी काफी है!

नीना: (शयनकक्ष से) मुझे एक सहायक चाहिए!

नास्त्या: माँ, माँ, मैं गाय का हाथ पकड़ूँगी, वरना उसे भी इंजेक्शन से डर लगता है!

नीना: यहाँ पकड़! मजबूती से पकड़! लेकिन दबा मत! ऐसे!

नास्त्या: गाय, मुझे तो बहुत सारे इंजेक्शन लग चुके हैं! और देखो मैं कितनी खूबसूरत हूँ, बस गिरने पर दर्द होता है! मुझे इंजेक्शन से डर नहीं लगता, अगर ज़रूरत हो तो मैं खुद लगा लूँगी! बस इतना ही! अरे, क्या है – इंजेक्शन! लगाया और चलो!

नीना: (बाहर आती है) क्या हरक्यूलिस (ओटमील) है?

कात्या: है। मैं सुबह दलिया (ओवस्यान्कु) खाती हूँ।

वादिम: अब तुम्हारी संगति होगी!

नीना: पानी में, पतला, जेली (किसेल) की तरह उबालो, और गर्म पिलाओ। और मुझे तुरंत ऊनी कपड़ा, एक दस्ताना या मोज़ा, कुछ पुराना दो। मैं उसे रगड़ूँगी, फिर मालिश... तुम्हें भी सीखना होगा... तुम्हारी बुर्योन्का को रोजाना मालिश की ज़रूरत होगी।

वादिम: इस गाय की शानदार संभावनाएँ हैं! जकूज़ी, मालिश, तरल दलिया! क्या फ्रेंच पढ़ाने की भी कोई योजना है?

नीना: (शयनकक्ष में जाती है) और एक, और दो, और तीन, और चार... आराम करते हैं।

कात्या मालिश को ध्यान से देखती है।

कात्या: (ज़ोर से) दलिया में नमक डालूँ?

नीना: और एक, और दो, और तीन, और चार... बहुत अच्छे! आराम करते हैं!

वादिम: क्या मुझे गाय की ज़रूरत है या मैं विदा हो सकता हूँ?

नीना: और एक, और दो... और तुम, नास्त्या, उसके अगले पैर रगड़ो!

वादिम: मैंने तो हिप्पोक्रेट्स की शपथ नहीं ली थी!

नीना: और एक, और दो, और तीन, और चार... आराम करते हैं!

कात्या: दलिया में नमक डालूँ?

नीना: नमक डालो!

कात्या रसोई में चली जाती है।

वादिम: तुम लोगों के साथ अच्छा है! अगर कुछ होता है, तो हमेशा बचाओगे! मैं जा रहा हूँ! अब पूरी तरह चला गया! (चला जाता है)

नीना: (शयनकक्ष से) और अब रगड़ते हैं! तुम रगड़ना जारी रखो, नास्त्या, निचले अंगों को रगड़ो, और मैं पीठ और पेट के साथ रगड़ूँगी... मेरी होशियार, कितनी अच्छी तरह लेटी है... थोड़ा सहन करो, मेरी अच्छी, थोड़ा सहन करो!

नास्त्या: बूढ़ी औरत कहती है: "गाय को काटो और बस!"

नीना: नास्त्या, क्या तुम पूरी तरह सो रही हो?

नास्त्या: (सुस्ती से) मैं सो नहीं रही हूँ... (पूरी तरह नींद में) और यह गाय असली है या मुझे सपना आ रहा है?

वादिम: (वापस आता है) कात्या!

कात्या एक बड़े चम्मच के साथ प्रकट होती है।

वादिम: और क्या सूटकेस भी फ्लैट में लाया गया था?

कात्या: केवल गाय लाई गई थी! सूटकेस के बिना!

वादिम: और डिक्की (बैगेजनिक) में सूटकेस नहीं है।

कात्या: और तुमने तो उसे रखा ही नहीं था! वह प्रवेश द्वार में, दरवाजे के पास खड़ा है।

वादिम: अब वहाँ नहीं खड़ा है। सच है, अगर कुछ जुड़ गया, तो ज़रूर कुछ कम होने की उम्मीद करो। कैसे लोग हैं! आधी रात को चुरा ले गए! बर्फ़ीला तूफ़ान, सर्दी, और कोई कहीं मेरा सूटकेस उठाए ले जा रहा है। उसके लिए एक सरप्राइज़ होगा! वह शायद बैंकिंग की किताबों की उम्मीद नहीं कर रहा होगा! यह कैसी ज़िंदगी हो गई है? थोड़ी सी चूक, या तो सींगों का सामना करो, या सूटकेस चोरी हो जाए।

कात्या: वह सूटकेस ले जाएगा, किताबें पढ़ेगा, अपनी योग्यता बढ़ाएगा। निर्दोष नागरिकों को अकेला छोड़ देगा और बैंक लूटना शुरू कर देगा।

वादिम: (गुस्सा निकालता है) कात्या, मैं तुम्हारी स्थिति अच्छी तरह समझता हूँ! लेकिन, डिप्रेशन (अवसाद) से लड़ने के लिए, घर में गाय लाना ज़रूरी नहीं है! तुम इससे अपनी समस्याएँ नहीं सुलझाओगी! बल्कि नई समस्याएँ पैदा करोगी!

नीना: (मेहराब में) तो, गाय पाल ली! तुम्हें क्या? किताबों का दुःख है? और किसी और चीज़ का दुःख नहीं? क्या, आवाज़ ऊँची कर रहे हो? तुम कौन हो? पूर्व पति? वह तुमसे नहीं चिपकती, और तुम भी मत चिपको! हर कोई जो चाहे पाले! खुद चुनता है! कात्या ने गाय पाली, और तुमने एक कुतिया (प्रेमिका – अपशब्द) पाली!

वादिम: बस! कल तक!

कात्या: रुको! (सीधा) फिर मत आना! इससे मुझे और बुरा लगता है!

नीना: शाबाश, कातेरिना! काटना है तो एक ही बार में!

कात्या: मैं अभी तुम्हें देख रही हूँ! और यह आखिरी बार है। और फिर कभी नहीं! (उसे देर तक देखती है)

नीना: (चीखती है) अरे, क्या हो रहा है!!! ओ-ओय!!!

कात्या और वादिम चौंक जाते हैं और शयनकक्ष की ओर देखते हैं।

नीना: गाय दुधारू (दोयनाया) है! उसका बछड़ा (टेलेनोचेक) था! बेचारी, बछड़े से बिछड़ गई!

नास्त्या: (रोने लगती है) बछड़े के लिए तरस आया! और बुर्योनुश्का के लिए तरस आया!

नीना: (नास्त्या से) अच्छा, कोई बात नहीं, रो मत...

वादिम: अलविदा, लड़कियों! मैं बछड़ा ढूँढ़ने जाता हूँ! (बाहर जाने लगता है)

कात्या: (पुकारती है) वाद्या!

नीना: कात्या! दलिया जल रहा है!

वादिम: वह जा रहा था, और उसके पीछे महिलाएँ रो रही थीं और पुकार रही थीं! अलविदा, कात्या! (चला जाता है)

शयनकक्ष से नास्त्या की आवाज़: बेचारी बुर्योनुश्का, मैं तुमसे प्यार करती हूँ!

नीना: (शयनकक्ष से बाहर आती है) चला गया? मैं खुद दलिया संभाल लूँगी। और तुम संभलो! (दलिया देखती है) बस, तैयार है! ठंडा होने दो। कात्या, क्या मैं तुम्हारे साथ बैठूँ? तुम्हें यहाँ अकेले अजीब नहीं लग रहा?

कात्या: मैं अकेली नहीं हूँ! (हँसती है)

नीना: और सही! तुमने तो गाय पाल ली! (हँसती है) और मेरी बच्ची किधर गायब हो गई? (शयनकक्ष में झाँकती है) कात्या, देख तो! गाय के पेट के पास सिमट कर इतनी मीठी सो रही है! हमारी स्थिति कुछ ठीक नहीं है! अरे, मैं उसे सेनेटोरियम (स्वास्थ्य केंद्र) भेज रही हूँ! कात्या, तुम रो लेतीं, है न?

कात्या: मैं ऐसे ही संभल लूँगी! तुम्हारा शुक्रिया!

नीना: तुम, बेशक, इस बेसुरी गायिका विका स्ट्राख को जानती हो, जो चौदहवीं मंजिल पर रहती है?

कात्या: अरे, बस... नमस्ते-नमस्ते...

नीना: तो, तुम्हारा... पूर्व... उसके साथ सोया...

कात्या: यानी कैसे?

नीना: बहुत अच्छे से! यहीं पर!

कात्या: और मैं कहाँ थी?

नीना: और तुम्हारा एपेंडिसाइटिस (अपेंडिक्स) निकाला जा रहा था। और याद है, तुम फ्रेंच के पाठ पढ़ाती थीं? अच्छा, उस लड़की को, जो अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों पर जाने की होड़ में थी?

कात्या: और?

नीना: उसका पाठ कितने बजे खत्म होता था?

कात्या: तुम यह क्यों कह रही हो?

नीना: और रात को उसे जीप में घर कौन छोड़ने जाता था?

कात्या: मैंने खुद वादिम से कहा था। वह शहर के बाहर रहती है। वह यह अनिच्छा से करता था।

नीना: अनिच्छा से या खुशी से, मैंने मोमबत्ती नहीं पकड़ी। और वह रहती है – यहाँ से तीन मिनट की दूरी पर।

कात्या: ऐसा है!

नीना: और तुम्हारा वादेच्का उसके पाठों के पैसे देता था... और इस चौथी मंजिल वाली घोड़ी (लोशाद - अपमानजनक) पर ध्यान दिया था, जिसके जुड़वाँ बच्चे हैं? उसके साथ भी सोया!

नास्त्या: (नींद में) और वाल्या आंटी के साथ भी!

कात्या: किस वाल्या आंटी के साथ?

नीना: अरे, सफाई करने वाली (उबोरश्चित्सा) के साथ!

कात्या: यह सब बकवास है! वाल्या शराबी है!

नीना: तब वह अभी शराबी नहीं थी, बल्कि एक तकनीशियन-निरीक्षक (टेख्निक-स्मोट्राइटेल) थी! अरे, वह तुम्हारे वादिम पर मरती थी! उसे चैन नहीं था! इमारत की सारी औरतें नाराज़ थीं!

कात्या: सभी नाराज़ थीं? तो पता चला, सिर्फ तुम्हारे साथ वादिम नहीं सोया?

ठहराव।

नीना: पता नहीं चला। तुम मुझे माफ कर दो, कात्या! मुझे शर्म आ रही है... यह एक बार हुआ था... यानी, तीन दिन... जब तुम अपनी माँ की एक और शादी में गई थीं... और वह हर बार शादी क्यों करती है? और तुम्हें पता भी नहीं था?

कात्या: क्यों बताया?

नीना: तुम्हें सांत्वना देना चाहती थी।

कात्या: सांत्वना दे दी।

नीना: मुझे प्यार हो गया था, अब खुद पर हँसी आती है! मैं उससे बच्चा पैदा करना चाहती थी और उसे तुमसे छीन लेना चाहती थी!

कात्या: सफल नहीं होती!

नीना: (आहत होकर) ऐसा क्यों नहीं होता?! (होश आने पर, दोषी भाव से) वह बच्चा चाहता था! तुमने व्यर्थ में बच्चा नहीं पैदा किया! यह स्वार्थ है! बच्चे पैदा करने चाहिए! और, अगर शादीशुदा हो, तो बेहतर होगा कि दो ही पैदा करो! मैं उसे बच्चे के जाल में आसानी से फँसा सकती थी! लेकिन मैंने संयम रखा, मुझे तुम पर तरस आया...

कात्या: धन्यवाद।

नीना: लेकिन मेरा बलिदान व्यर्थ गया... मुझसे ज़्यादा चालाक मिल गई और उसने तुम्हारे वादिम को हडप लिया!

कात्या: हाँ। मुझसे और तुमसे ज़्यादा चालाक मिल गई!

नीना: हाय, मैंने कितने आँसू बहाए... और जलन भी हुई!

कात्या: जलन? मुझसे?

नीना: तुम कहाँ... माफ करना... अब समय हो गया! गाय को दलिया पिलाओ और किसी और चीज़ के बारे में मत सोचो! मैं अपनी बच्ची को ले जाऊँगी! (शयनकक्ष से नास्त्या को उठाती है और उसे अपार्टमेंट से बाहर ले जाती है, धीरे से) यहाँ बंदूक क्यों रखी है?

कात्या: (इतनी ही धीरे) चिंता मत करो – इसमें कारतूस नहीं है।

नीना: (धीरे) कहते हैं, बिना कारतूस वाली बंदूक भी कभी-कभी चल सकती है! शुभ रात्रि! अगर कुछ हो – मुझे बुलाना!

कात्या: क्या जीवित रहेगी?

नीना: ठीक हो जाएगी! (अपने फ्लैट में नास्त्या को गोद में लिए हट जाती है)।

नास्त्या: (सुस्ती से, आखिरी बार) और बुर्योनुश्का वापस अपनी तस्वीर में नहीं चली जाएगी?

कात्या: (मेहराब में रुक जाती है) अच्छा, बुर्योनुश्का? तुम्हें बुरा लग रहा है? किसने तुम्हें... जीवित... फेंक दिया? असल में, तुम्हारे साथ और मेरे साथ, एक जैसा ही किया गया है। शायद, इसलिए ही तकदीर ने हमें मिला दिया? बहुत अच्छे समय पर नहीं... मेरे लिए भी, और तुम्हारे लिए भी... हालाँकि, तुम्हारे पास कोई चुनाव नहीं था... मेरे पास भी शायद नहीं। और अब तुम्हें दलिया पीना है। (रसोई में जाती है) तुम्हें किस चीज़ में दूँ? शायद अपने पिछले जीवन में तुमने कभी थाली का इस्तेमाल नहीं किया होगा... (साइडबोर्ड से फलों के लिए एक चौड़ा क्रिस्टल फूलदान निकालती है और रसोई में ले जाती है) मेरे यहाँ मेहमान बनोगी तो सिर्फ क्रिस्टल से खाओगी! (फूलदान में दलिया डालती है) खाना तैयार है, मैडम गाय! (शयनकक्ष की दहलीज पर बैठती है और दलिया का फूलदान गाय की ओर बढ़ाती है। गाय दिखाई नहीं देती) बॉन एपेतीत (Bon appétit), गाय!। कोई प्रतिक्रिया नहीं! क्या होगा अगर तुम भी पीड़ित हो? हम सब दूसरे के दुख के बारे में क्या जानते हैं? और क्या हम अपने दुखों के बारे में कुछ जानते हैं? मुझे देखो! मुझे अभी कुछ महसूस नहीं हो रहा है... क्या इसी को दुख कहते हैं? हम कितना कम समझते हैं कि दुख क्या होता है...

और सांत्वना के बारे में हम और भी कम समझते हैं... दलिया खाओ! मुझे भी बहुत बुरा लग रहा है, लेकिन मैं खुद को यह दलिया खाने के लिए मजबूर कर सकती हूँ... (फूलदान को अपने मुँह के पास ले जाती है और किनारे से एक घूंट पीती है) अजीब, उल्टी नहीं हुई... स्वाद, गंध न महसूस होना, – क्या यही दुख है? (फूलदान गाय की ओर बढ़ाती है) कोशिश करो, गाय! गाय... (सोच में पड़ जाती है) हे भगवान, हे भगवान, मानो कल की बात हो... प्राइमस (केरोसिन स्टोव), केरोसिन स्टोव... और दलिया की वैसी ही महक... मैं और दादी शेविंग पाउडर से साबुन बना रहे हैं... मैं एक हरी सीटी पर खड़ी हूँ... मैं अभी मेज तक नहीं पहुँच पाती... दादी चिकनी गोल टिकियाँ बनाती हैं और कांटे से किनारों को गोदती हैं... और फिर दोनों तरफ उसी कांटे की नोक से गुलाब बनाती हैं... और गुलाबों की खुशबू आती है, और दादी स्वर्ग की कहानी सुनाती हैं... स्वर्ग में वही जाता है जो प्यार करता है... सांप्रदायिक अपार्टमेंट (कम्युनल्का) की पड़ोसी औरतें देखती और सुनती हैं, और आह भरती हैं.. और उस... उसे देखना, सूरज को देखने जैसा है – ज़्यादा देर नहीं देख सकते, आँखों से पानी आ जाता है। और कैसे देख लिया कि फीता खुल गया है... सीटी से उतरी और उसके पास... घुटनों के बल बैठी, झुकी और फीता बाँध रही हूँ... और मैंने अभी-अभी फीते बाँधना सीखा है... और मुझे लगता है, कैसा सन्नाटा है और सब हमें देख रहे हैं... मैं घबरा गई... कैसे-तैसे बाँध लिया... और गलती से उसके चेहरे की ओर देखा... और अचानक समझ गई कि मुझे पता है – मैं उससे प्यार करती हूँ... बिल्कुल पता है – प्यार करती हूँ... इस तरह समझ आ गया – पता है, प्यार करती हूँ... अजीब... आधी सदी बीत गई, और मैं गाय को बता रही हूँ... हाँ... गाय को... तो क्या हुआ, गाय को? और शादी से पहले उसके पिता ने मुझसे बात की थी... वादिया (वादिम) के बच्चे नहीं हो सकते... एक मामूली बचपन की बीमारी के बाद जटिलता... लेकिन वादिया को यह नहीं बताना चाहिए... मुझे पता होना चाहिए, और वादिया को – नहीं... तुमने आँखें खोलीं? मेरी होशियार! और अब – चाटो! अच्छा... चलो, मेरी आखिरी खुशी! होशियार! बहुत अच्छे! एक बार और चाटो! मेरी खुशी, सूरज, क्या सच में तुम मुझे समझती हो? (हँसती है) किसी को दूसरे को समझना नसीब नहीं! यहाँ तक कि भगवान से भी हम कहते हैं; हे भगवान, मुझे सुन! समझना नहीं, सुनना,- हम भगवान से प्रार्थना करते हैं! खाओ, खाओ, प्यारी, सेहत के लिए!

क्या तुम मुझे सुन रही हो? क्या सुन रही हो? मैं यह कभी नहीं समझ पाऊँगी! क्या सुन रही हो? अच्छा, कोई संकेत दो! कोई संकेत दो! (निराशा से) मेरी प्यारी गाय, मुझे सांत्वना दो, कोई संकेत दो!

और तभी हम देखते हैं कि गाय ने खिंचाव किया, कात्या का चेहरा चाटा और फिर पीछे हट गई।

कात्या: मेरी प्यारी, तुम्हारा शुक्रिया कि तुम मेरे पास हो! (रोने लगी, और ज़ोर से, और ज़ोर से, और उसने गाय की गर्दन को गले लगा लिया, और आनंद के साथ रो रही है, क्योंकि, रोने के लिए कोई है।) मैं इतनी पीड़ित हूँ... मैं इतनी पीड़ित हूँ... मैं प्रार्थना करती हूँ, प्रार्थना करती हूँ... दलिया खाओ... मर मत जाओ, मैं अकेली नहीं रह सकती... मैं नहीं रह सकती... मैं प्रार्थना करती हूँ, दलिया खाओ!

वही अपार्टमेंट। कुछ बदलाव हैं क्योंकि यहाँ कई दिनों से एक मेहमान (गाय) रह रही है। कालीन हटा दिया गया है, लपेटा गया है और दीवार के पास रखा गया है। शयनकक्ष का रास्ता एक कुर्सी से बंद है (उस कुर्सी का कवर किसी तरह उखड़ा हुआ और टेढ़ा है, जैसे उसे चबाया गया हो), पर्दा बिल्कुल हटा दिया गया है। रसोई में कुछ बाल्टियाँ, बोरे, दूध के जार हैं। फर्श पर तिरपाल (क्लींकी) और अखबार बिछे हैं। कात्या जींस और स्वेटर में, हाथ में फोन रिसीवर लिए हुए है।

कात्या: (रिसीवर में बोलती है) यह गर्म जंपसूट (चौग़ा) के बारे में है... ठीक है, मूलतः... कुत्ते (सोबाकी) के लिए। हाँ, मैंने सब माप लिया है... लिखिए! (एक कागज़ को देखती है) पीठ की लंबाई, कंधों (खोल्की) से पूँछ तक 175 सेंटीमीटर... शरीर के सबसे चौड़े हिस्से का घेरा 180 सेंटीमीटर। बेशक, 1 मीटर, 80 सेंटीमीटर! गर्दन की परिधि 85 सेंटीमीटर। नहीं, मैंने सब ठीक नापा है। (थोड़ा शरारत से) क्यों नहीं हो सकता? हाँ! इतनी बड़ी... कुत्ता! क्यों? क्या नस्ल? आवारा (ड्वोरन्यागा)! हाँ, बहुत-बहुत बड़ा! पड़ोसी (सोसैडकोय) के साथ मिलकर दो बार नापा। आगे बढ़ते हैं। ऊँचाई, कंधों से खुर (कोप्ता) तक... ठीक है, पंजे के नीचे तक... 140 सेंटीमीटर। कब तैयार होगा? नहीं तो मैं उसके साथ बिल्कुल टहलती नहीं हूँ। क्या सामग्री? सुरक्षात्मक? अच्छा, वह तो मेरे पास – पैराट्रूपर

(डेसांतनिक) नहीं है... और, अगर, मैं अपना सामग्री लाऊँ? मेरे पास – एक लबादा है, मैं उसे उसके लिए (गाय के लिए) बदल सकती हूँ... उसे पसंद आता... अरे, मैं मुख्य बात लगभग भूल ही गई... सिलाई करते समय किसी तरह थन (व्यम्या) का ध्यान रखना होगा... मतलब यह कैसे – क्यों? हाँ, नाम (इम्या) नहीं, थन... आपको क्या अजीब लग रहा है? क्या आपने कभी थन नहीं देखा?

दरवाजे की घंटी बजती है, नीना आती है।

कात्या: मेरे पास कोई आया है! मैं फिर से फोन करूँगी। (रिसीवर रखती है और दरवाजा खोलती है)

नीना: (दहलीज से) कात्युशा! क्या तुम्हें पता है तुम्हारी खिड़की के नीचे क्या हो रहा है? सींग वाली (रोगातया - गाय) खिड़की से बाहर देख रही है, और वहाँ से लोग – उस पर! बच्चे स्कूल नहीं पहुँच पाते। खड़े होकर देखते रहते हैं। ट्रैफिक लाइट पर गाड़ियाँ रुकती हैं और चलना भूल जाती हैं। बुर्योन्का को हॉर्न मारते हैं, हँसते हैं। पूरे बुलेवार्ड के लिए एक नाटक (स्पेक्टकल) है! पर्दे क्यों हटाए?

कात्या: (लापरवाही से) उन्हें चबा रही है! कहीं दम न घुट जाए, भगवान न करे! उसे देखने दो! उसने क्या देखा है?

नीना: (शयनकक्ष में झाँकती है) खुर वाले को नमस्ते! (कात्या से) उसने पलट कर भी नहीं देखा! उसके लिए यह सड़क, हमारे लिए टीवी (टेलीविज़र) की तरह है!

कात्या: हमने (मैंने और गाय ने) नहाया, कंघी की, दूध निकाला, अपार्टमेंट में घूमे, खिंचाव किया; थोड़ा खिड़की से बाहर देखेंगे और फिर नाश्ता करेंगे! (जार की ओर सिर हिलाती है) नास्त्या के लिए ताज़ा दूध ले जाओ! सुबह छह लीटर दूध निकाला! उँगलियाँ दुख रही हैं! कोई बात नहीं, आदत हो जाएगी!

नीना: नास्त्या ताज़ा दूध बहुत अच्छे से पीती है। और जैसे ही आँखों के सामने मजबूत हो रही है। और मैं, कभी ऐसे, कभी वैसे...

कात्या: नाश्ते के बाद मेरी गाय लेट जाएगी। और मैं उसके पास गद्दे पर (मैट्रासिके) बैठ जाऊँगी और कुछ क्लासिक पढ़ूँगी, चेखव, बुल्गाकोव... वह कैसे सुनती है! गर्म हो जाऊँगी और सो जाऊँगी। और मुझे साफ रंगीन नदियाँ और सुनहरे आकाश दिखाई देते हैं... और केवल बचपन में ही मैं इतनी खुश थी!

नीना: जीने के लिए क्या करोगी? दूध बेचना शुरू करोगी?

कात्या: मैं काम पर जाऊँगी।

नीना: बहुत दिनों से काम नहीं किया। क्या आदत हो पाएगी? और उम्र भी, मुझे माफ करना, बेशक। तुम्हारी उम्र में करियर शुरू नहीं करते।

कात्या: जब तक इंसान जीवित है और किसी से प्यार करता है, तब तक कुछ भी देर नहीं है, निनोच्का!

नीना: तुम पर यह अजीब प्रभाव पड़ा कि तुम्हारे आदमी ने तुम्हें छोड़ दिया। मुझे डर था कि तुम कुछ कर बैठोगी। पर तुम, इसके विपरीत, कुछ... चमक उठी! मैं खुद को अब किस बात पर पकड़ रही हूँ, पता है? तुम पर नज़र डालती हूँ! और तुम्हारे पास से जाने का मन नहीं करता! लेकिन जाना है! मैं नास्त्या को सेनेटोरियम भेज रही हूँ। बहुत काम है। चलती हूँ। दूध ले लूँगी। शुक्रिया!

कात्या: और कल मैं तुम्हें पनीर और खट्टी क्रीम खिलाऊँगी! और उबला हुआ दूध, और मक्खन... सब खुद सीखूँगी। मैंने एक खास किताब खरीदी है। जीना मजेदार हो गया है!

नीना: कात्या, तुम अजीब हो गई हो! मैं आज रात तुम्हारे बारे में बहुत अच्छा सोच रही थी, फिर सब कुछ भूल गई। यह गाय सरल नहीं है। पहली बात – तुम्हारे आदमी ने तुम्हें छोड़ा, और तुरंत वह आ गई! और सांत्वना दी! ओह, यह गाय सरल नहीं है! क्या तुम जानती हो कि इंसान की आत्मा बिल्ली या कुत्ते में जा सकती है? कितने मामले बताते हैं!

कात्या: और मेरी गाय में किसकी आत्मा आई है?

नीना: अरे, वादिम के मृत माता-पिता की! उन्होंने तुमसे कैसे प्यार किया और तुम्हारी देखभाल की, कात्या!

कात्या: माँ, पापा... वादिम कहता था कि वे बहू को बेटे से ज़्यादा प्यार करते हैं... और वे हँसते थे और जवाब देते थे कि मैं उनकी बेटी हूँ, बहू नहीं।

नीना: तुम्हारी गाय में उनकी आत्मा आई है! वे सांत्वना देने आए हैं। वे खुद को दोषी मानते हैं कि उनके बेटे ने तुम्हें दुख पहुँचाया। हँसो मत, कात्या! खुद सोचो – पति गया, गाय आई। ऐसे नहीं होता! गाय साधारण नहीं है! यहाँ मॉस्को के बीचों-बीच, रात को, एक साधारण गाय कहाँ से आ सकती है? हमने सोचा, वह मर रही है, और शायद, वह उल्टा, जीवित हो रही थी... वह वहाँ से आई और इस दुनिया के लिए जीवित हो रही थी... (श्रद्धा से) मैं जाकर नमस्ते करती हूँ! (मेहराब के पास जाती है) बुर्योनुश्का! (चीखती है) कात्या! वह जापानी (यापोंस्को) कम्बल चबा रही है!

कात्या: (शयनकक्ष में भागती है) फिर से नज़र नहीं रखी! (शयनकक्ष से सुनाई देता है) मेरी खुशी, थूक दे! मुझे दे! यह लो तुम्हारा घास! और यह हम हटा देंगे, यह बुरी चीज़, यह सिंथेटिक!

नीना: अरे, कात्या, तुम्हारे और तुम्हारी गाय के बारे में कहने को शब्द नहीं हैं! (दूध का जार लेकर चली जाती है)

कात्या: हमारी नाक तो गर्म है? क्या हम खिड़की के पास ठंडे नहीं होंगे? मेरी खूबसूरती, मेरी फुलझड़ी (पुशिनोच्का), मेरी प्यारी जान, अब नाश्ता करेंगे!

दरवाजे की घंटी बजती है। कात्या, एक बड़े क्रिस्टल कटोरे (चाशी) में गरम दलिया भरकर, दरवाजा खोलती है। दहलीज पर – अलेक्सांद्रा येमेल्यानोव्ना और अलेक्सांद्र रिफ़ातोविच हैं। उसकी पीठ पर एक बड़ा बैकपैक (र्युकज़ाक) है, और उसके सामने पहियों वाला एक बैग है। उसके हाथों में दो बड़े बैग हैं। कात्या हक्का-बक्का होकर पीछे हटती है।

अलेक्सांद्रा: (जैसे कि उसे पहले से यकीन है कि वह कात्या के लिए बहुत बड़ी खुशी है) अपनी जन्मदाता माँ (मात रोद्नुयु) का स्वागत करो! (बाहें फैलाकर कात्या की ओर बढ़ती है)

दूसरा अंक

सब कुछ वही है।

अलेक्सांद्रा: अपनी जन्मदाता माँ का स्वागत करो!

कात्या: (पीछे हटती है) माफ करना... (जल्दी से बैठक कक्ष में जाती है और कटोरा फर्श पर रख देती है)

अलेक्सांद्रा अलेक्सांद्र को अपार्टमेंट में खींचने की कोशिश करती है, लेकिन वह पूरी तरह विरोध करता है। कात्या वापस दालान (प्रिखोझयु) में आती है।

अलेक्सांद्रा: यह है तुम्हारा नया पापा (पिता)! (उसे कात्या की ओर धकेलती है) इसे प्यार करना और सम्मान करना! हमने अपना हनीमून (मेडोवी मेस्यात्स) यहाँ बिताने का फैसला किया। तुम्हें सांत्वना देंगे, और बाज़ार में थोड़ा व्यापार भी करेंगे। तुम्हारे पति ने तुम्हें छोड़ दिया है, बहुत जगह खाली हो गई है! चिंता मत करो, हम साथ रहेंगे, तुम्हारी शादी करवाएँगे!

कात्या: कम से कम पहले से बता देती, माँ!

अलेक्सांद्र: (बहुत शर्मिंदा है) नमस्ते! अलेक्सांद्र, माफ़ करना, रिफ़ातोविच! मिलकर खुशी हुई... (हिम्मत जुटाई) मेरे लिए यह सुखद आश्चर्य है कि मेरी पत्नी की एक बेटी है, जो दिलचस्प और जवान है!

अलेक्सांद्रा: (दृढ़ता से) देखो पर नज़र मत जमाओ! (कात्या से) वह मेरा ऐसा महिलावादी (बाबनिक) है, उस पर नज़र रखनी पड़ती है! वह महिलाओं के लिए इतना धोखेबाज़ (अफेरिस्ट) है! (और उसके साथ बाजू पकड़कर कात्या के सामने पेश होती है)

अलेक्सांद्र: (बहुत शर्मिंदा है) शायद मैं यहाँ अतिथि हूँ?

अलेक्सांद्रा: नमस्ते! वह यहाँ अकेली उदास थी! और अचानक ऐसा सरप्राइज़ – माँ और पापा आ गए! (पति से) और तुम उसके रूप-रंग पर ध्यान मत दो... वह हमेशा से ऐसी ही रही है! न गा सकती है, न नाच सकती है! कपड़े उतारो, क्यों ठिठके हो? (कात्या से) और तुम भी हिलो-डुलो! चप्पल दो! उसे – पति वाली, मुझे – अपनी! हम मेट्रो में बहुत धक्के खाए, खूब बहस की! (पति से) और तुम रसोई में जाओ! उसकी रसोई, फिल्मों की तरह है!

कात्या: (अलेक्सांद्र से) बहुत खुशी हुई! अंदर आइए, कृपया!

अलेक्सांद्र: (रसोई में प्रवेश करता है) ओह, कितनी शानदार रसोई है, माफ़ करना!

अलेक्सांद्रा: (दरवाजे पर) क्या तुम सपना देख सकते थे कि ऐसी रसोई में हनीमून बिताओगे? (दालान में कात्या के पास आती है) बस, उसके सामने यह मत कहना कि तुम पचास की हो!

कात्या: हर साल मेरा एक नया पापा होता है!

अलेक्सांद्रा: यह पापा – तुम्हारे आखिरी पापा हैं! मुँह फुलाओ मत, उन्हें पापा कहने से तुम्हारी ज़ुबान नहीं जलेगी! हम तुम्हारे पास सदा के लिए नहीं आए हैं! बस एक महीने... या दो... फिर देखेंगे, क्या गारंटी है? (ज़ोर से) हम तब तक नहीं जाएँगे जब तक तुम्हारी शादी नहीं करवाते!

कात्या: मैं शादी नहीं करना चाहती!

अलेक्सांद्रा: नमस्ते! बस माँ की बात के खिलाफ जाना है! और हमने तो एक लड़का ढूँढ लिया है!

कात्या: क्या ढूँढा है, माँ?

अलेक्सांद्रा: बस कुछ दिनों की बात है! हमने उसे स्टेशन से ही फोन किया और सीधे तुम्हारे पास बुला लिया!

कात्या: (फोन लाती है) और अब यहीं से फोन करो और सीधे बुलावा रद्द करो!

अलेक्सांद्रा: (फोन को धकेलती है) बहुत देर हो चुकी है! वह रास्ते में है! और बहाने मत बनाओ – मैंने तुम्हारे लिए बहुत अच्छा लड़का ढूँढा है!

कात्या: (व्यंग्यात्मक रूप से) क्या वह भी जवान है?

अलेक्सांद्रा: नहीं, तुम्हारा तो तुमसे उम्र में बड़ा होगा!

कात्या: क्या बात है, माँ! अपने लिए जवान, और मेरे लिए...

अलेक्सांद्र: (रसोई से) औरतों! तुम मुझे भूल गईं, और मुझे शर्म आ रही है!

अलेक्सांद्रा: (उसके पास दौड़ती है, चिड़चिड़ी होकर) मैं अपनी बेटी को सांत्वना दे रही हूँ! वह इस बात पर मर रही है कि उसके आदमी ने उसे छोड़ दिया, इतनी मर रही है, इतनी मर रही है!

कात्या: (हताशा से कहती है) माँ।

अलेक्सांद्र: (कात्या से) और आप उनकी बातों पर ध्यान न दें! हम पुरुष, सब ऐसे ही हैं – कभी जाते हैं, कभी आते हैं, हमें तो सुकून सिर्फ सपनों में ही मिलता है! खासकर जब आप इतनी दिलचस्प, जवान महिला हैं, पूरी जवानी में!

अलेक्सांद्रा: (कात्या से) देखा, उसने तुम पर नज़र जमा ली है!

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) मैं ईमानदारी से कह रहा हूँ, और तुम उलटा मतलब निकाल रही हो! मैं हमेशा एक महिला को सांत्वना देना चाहता हूँ!

अलेक्सांद्रा: अभी रुस्लान आएगा, वही सांत्वना देगा!

अलेक्सांद्र: (कात्या से) रुस्लान मेरा भाई है। हम एक ही उम्र के हैं (पोगोडकी - मतलब एक ही साल में पैदा)। हम छह भाई हैं, और सब एक ही उम्र के, और शादीशुदा सिर्फ मैं हूँ। (दृढ़ता से कात्या से फोन छीनता है और नंबर डायल करना शुरू करता है) और रुस्लान की बजाय रोमन को बुलाना बेहतर होता।

अलेक्सांद्रा: हमने पहले रोमन को फोन किया था, पर वह नहीं मिला! और रुस्लान मिल गया! जो मिल गया, वही ठीक है! (उससे फोन छीन लेती है)

अलेक्सांद्र: रुस्लान का स्वभाव – बड़ा मुश्किल है! हर औरत ऐसा स्वभाव नहीं सह सकती! (कात्या से) और आप तो एक नाज़ुक महिला हैं, यह आँखों से साफ झलकता है, असहाय... (फिर से फोन ले लेता है)

अलेक्सांद्रा: यहाँ 'नाजुक' का राग अलाप रहा है... अपनी पूँछ मत फैलाओ! बेहतर है बताओ, – क्या वह रुस्लान को पसंद आएगी? (अंततः फोन छीन लेती है)

अलेक्सांद्र: और कैसे नहीं? हम भाई, महिलाओं के मामले में सब एक जैसे हैं... खुद में अलग हैं, पर महिलाओं तक बात आने पर सब एक जैसे, हम सभी महिलाओं का सम्मान करते हैं।

अलेक्सांद्रा: सम्मान दिखाना – यह तो आप कर सकते हैं, इसमें आप कोई मना नहीं करेंगे! पर, शादी के बारे में तुम्हारा रुस्लान कैसा है?

अलेक्सांद्र: क्यों नहीं? हुआ है कि उसने शादी भी की है! और खास बात – उसने कभी भी अपनी किसी पत्नी को नहीं छोड़ा!

कात्या: तो उसने उनका क्या किया? क्या उन्होंने उसे छोड़ा?

अलेक्सांद्र: लगभग ऐसा ही कह सकते हैं। वह तीन बार विधुर (व्दोवी) हुआ है। तीन पत्नियों को दफनाया है, और हमेशा सम्मान के साथ, नौ दिन, चालीस दिन, और यहाँ तक कि साल भर...

अलेक्सांद्रा: कितना अच्छा होता अगर कात्या से उसकी शादी हो जाती! अरे, मुझे चिंता है, बहुत चिंता है, कहीं वह उसे पसंद न आए!

कात्या: चिंता मत करो, माँ! मैं शादी नहीं करूँगी। (रिसीवर लेकर अपनी जगह रख देती है)

अलेक्सांद्रा: तुम बेकार उम्मीद कर रही हो कि तुम्हारा वापस आएगा। वह कभी बीस साल की लड़की को छोड़कर तुम्हारे पास वापस नहीं आएगा! और अपना दिमाग मत खराब करो!

कात्या: बस करो, माँ! (बात बदलने के लिए रसोई में जाती है) तुम लोग कैसे आए?

अलेक्सांद्रा और अलेक्सांद्र उसके पीछे आते हैं।

अलेक्सांद्रा: हम सिर्फ तुम्हारे लिए आए हैं! ताकि तुम्हारी शादी करवा सकें!

कात्या: माँ, बस करो!

अलेक्सांद्रा: और तुम बिना पति के कैसे रहोगी?

कात्या: और मुझे पति की क्या ज़रूरत?

अलेक्सांद्रा: नमस्ते! क्या तुम कोई वेश्या (प्रोस्टितुत्का) हो, जो बिना पति के रहे? (पति से) हाँ, मेरे साथ, जब कुछ होता है, तो केवल पतियों के साथ! कभी नहीं! मुझे तो यह भी नहीं पता कि बिना पति के कैसे कुछ करना है! और कैसे शुरू करूँ, यह भी नहीं समझती! पतियों के साथ – हाँ, पर बिना पतियों के – कभी नहीं!

अलेक्सांद्र: चाहे पुरुष कितनी भी हवा दिखाएँ, एक सभ्य महिला आज भी आकर्षित करती है।

अलेक्सांद्रा: क्या तुम्हें लगता है, तुम्हारा रुस्लान उससे शादी करेगा?

अलेक्सांद्र: और भले ही शादी न करे? चार और भाई बाकी हैं!

अलेक्सांद्रा: अरे, काश, है न? तुम रुस्लान से, अपनी तरफ से, मेरी कात्या की सिफ़ारिश करना! वह, भले ही सुंदर न हो, पर उसमें सफाई है, और खाना बनाती है... वह उसकी हर तरह से सेवा करेगी! उसे अकेले क्यों कटना चाहिए? कुर्सी से उठो, फ्लैट दिखाती हूँ! (कात्या से) तुम्हारे यहाँ कैसी बदबू आ रही है? समझ नहीं आ रहा! क्या बिल्ली पाल ली?

कात्या: लगभग! बैठो! चाय पीते हैं! चाय के साथ क्या दूँ? मुझे मेहमानों की उम्मीद नहीं थी!

अलेक्सांद्रा: हम मेहमान नहीं हैं! हम अपने हैं! हमारे साथ शिष्टाचार (त्सेरेमोन्या) मत करो! हमें चाय की कोई ज़रूरत नहीं! मांस दो, पनीर... अगर बोर्श है, या कुछ और, तो वह भी दो! साशा (अलेक्सांद्र) को सुबह खाना पसंद है! बस परोसो! जो है, सब परोसो! हम कोई आपत्ति नहीं करेंगे! और यहाँ इतना दूध क्यों पड़ा है? और इस कड़ाही (कज़ाने) में क्या है? (झाँकती है) दलिया?

कात्या: बाजरा (पशेंका) का दलिया।

अलेक्सांद्रा: हे भगवान, इतना सारा दलिया किस लिए? क्या एक साल के लिए एक साथ उबालती हो? (फ्रिज खोलती है) और फ्रिज में उल्टा खाली है!

कात्या: मैं स्वस्थ जीवनशैली (ज़दोरोवी ओबराज़ ज़िज़नी) अपना रही हूँ!

अलेक्सांद्रा: पैसे नहीं हैं? और दावा करो! तुम आधे का दावा करो! उसे आधे पैसे देने दो! है न, साशा?

अलेक्सांद्र: यह दुर्लभ है जब पति अपनी पूर्व पत्नी को आधे पैसे देता है। तुम, शूरा, बैगों से सामान निकालो!

अलेक्सांद्रा: नमस्ते! हम सब सामान लाए ताकि खा जाएँ? और बाज़ार में, क्या बेचेंगे? (कात्या से) ठीक है, ऐसे ही, उसे दलिया परोस दो!

अलेक्सांद्र: दलिया में बुराई क्या है? दलिया अच्छा खाना है!

कात्या उसके सामने दलिया की एक प्लेट रखती है।

अलेक्सांद्र: शुक्रिया! (चखता है) बहुत स्वादिष्ट दलिया है!

कात्या: सेहत के लिए!

अलेक्सांद्रा: तो खाओ! (कात्या से) और मैं भी खाऊँगी! हम अब तुम्हारी इस कड़ाही का काम तमाम कर देंगे! चिंता मत करो! हम, सफर से आने के बाद, पूरी कड़ाही खा जाएँगे! (अपने लिए दलिया डालती है) और सच में, कितना स्वादिष्ट है!

कात्या: तो फिर मैं अभी दलिया की एक और कड़ाही लगाती हूँ!

अलेक्सांद्रा: कहाँ? दूसरी हम नहीं खा पाएँगे!

कात्या: (चिंतित होकर) अभी और दलिया बनाना होगा... और मुझे घुड़दौड़ के मैदान (इपोद्रोम) भी जाना है, और चिड़ियाघर (ज़ोपार्क), और दर्जिन (पोर्तनिखे) के पास भी, ज़रूर!

अलेक्सांद्रा: पति के बिना कितनी मस्ती कर रही हो!

अलेक्सांद्र: घुड़दौड़ के मैदान – अच्छा है। महिला के लिए, – दुर्लभ है, और एक पुरुष की नज़र में प्रभावशाली। (अलेक्सांद्रा से) बेहतर होता अगर, फिर भी, रोमन को ही फोन लग जाता। वह घुड़दौड़ के मैदान की खातिर, अपना सब कुछ बेच डालता था। इसलिए, उसकी पत्नी भी उसे छोड़कर चली गई। घुड़दौड़ के मैदान का बोझ नहीं सहा। रोमन तुम्हें ज़्यादा पसंद आता। थोड़ा दलिया और दो, माफ़ करना, बेशक! हमने दलिया खाना कम कर दिया! और व्यर्थ!

अलेक्सांद्रा: (पति से) क्या तुम, शूरा, चबाते (चावकाएश) हो? तुम तो खाना चबाते नहीं थे?

अलेक्सांद्र: मैं नहीं चबा रहा हूँ।

अलेक्सांद्रा: और मुझे सुनाई दे रहा है! कोई चबा रहा है! मेरी सुनने की क्षमता बहुत तेज़ है!

अलेक्सांद्र: मैं नहीं चबा रहा हूँ।

अलेक्सांद्रा: तो कौन?

अलेक्सांद्र: कोई नहीं!

अलेक्सांद्रा: इनकार मत करो! (चुलबुली होकर) मैं उस पुरुष का सम्मान करती हूँ जो चबाता है। मतलब स्वभाव (तेम्पेरामेंट्नी) है।

अलेक्सांद्र: तुम्हारे कानों में चबा रहा है! बुढ़ापे से!

अलेक्सांद्रा: किस बुढ़ापे से? तुम क्या इशारा कर रहे हो? कात्या, सुनो तो! कोई तो चबा रहा है!

अलेक्सांद्र: (ताना देता है) बुढ़ापे से, बुढ़ापे से!

कात्या: यह मेरी बिल्ली है जो चबा रही है!

अलेक्सांद्रा: हे भगवान, तुम्हारी बिल्ली तो गाय के बराबर है, नहीं तो नहीं! ऐसे चबाती है, जैसे गाय!

कात्या: सही!

अलेक्सांद्रा: जब पति छोड़कर जाते हैं तो सारी औरतें अजीब होने लगती हैं! कोई बिल्ली पालता है, तो कोई, पूरी तरह पागल, – कुत्ता! और सीधे फ्लैट में रखता है! छी, तुम्हें इस गंदी चीज़ की क्या ज़रूरत!

अलेक्सांद्र: मुझे माफ़ करें, कात्या, लेकिन मैं चुप नहीं रह सकता। हर प्राणी (तवार) अपनी जगह पर होना चाहिए। बिल्ली, मान लो, दालान (सेन्याह) में, कुत्ता – केनेल (कोनुरे) में...

कात्या: (बिना व्यंग्य के बीच में बोलती है) गाय – गौशाला (ख्लेवु) में।

अलेक्सांद्र: गाय यहाँ कहाँ से आ गई। आप मेरी बातों को क्यों बेवकूफी में बदल रही हैं?

अलेक्सांद्रा: (कात्या से) अकड़ क्यों रही हो? तुम उसे पापा कहो, अकड़ मत दिखाओ! मैं जाकर देखती हूँ क्या बिल्ली है... ऐसे चबाती है जैसे गाय... (अपार्टमेंट में जाती है) किटी-किटी-किटी (किस-किस-किस)...

अलेक्सांद्र: (कात्या से) और आप बिल्कुल अपनी माँ जैसी नहीं लगतीं! आप बहुत ज़्यादा आकर्षक हैं!

अलेक्सांद्रा: किटी-किटी-किटी... और यहाँ भी दलिया है!

अलेक्सांद्र: मुझे उम्मीद है कि मैं आपको और करीब से जान पाऊँगा। माँ (मतलब अलेक्सांद्रा) कल कुछ सामान बेचने का सोच रही है, पर मुझे, डर है, तबियत ठीक नहीं रहेगी। मैं बेहतर होगा कि यहीं लेटा रहूँ... आपके साथ... मुझे आपका यहाँ पसंद आया... आप, और आपका फ्लैट, और शांति...

अलेक्सांद्रा: किटी-किटी... घास! हे भगवान! (शयनकक्ष में झाँकती है।) किटी-किटी-किटी! (चीखती है, तेज़ी से रसोई की ओर भागती है, ठोकर खाती है, गिरती है, पूरी ताकत से रेंगती है, रसोई में घुसती है, दरवाजा बंद करती है, अपनी पीठ उससे टिकाती है और जोर-जोर से क्रॉस का निशान बनाती है) हे भगवान, हे भगवान! मुझे माफ कर दो, हे भगवान, मेरे पापों को माफ कर दो! मुझे माफ कर दो, भगवान! मैं पश्चाताप करती हूँ, पश्चाताप करती हूँ कि मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी व्यभिचार (ब्लुदे) में बिताई! कि मैंने अपने सभी पतियों के साथ व्यभिचार किया! सब के लिए पश्चाताप करती हूँ, मुझे माफ कर दो, भगवान!

अलेक्सांद्र: (उठता है) व्यभिचार किया?

अलेक्सांद्रा: (घुटनों पर गिर जाती है) हे भगवान, माफ कर दो, हे भगवान, माफ कर दो!

कात्या: माँ, शांत हो जाओ!

अलेक्सांद्र: व्यभिचार किया! देखो! और अपने आप को ऐसे पेश किया मानो मैंने उसे कुँवारी (देवित्सेय) पाया हो!

अलेक्सांद्रा: (कात्या के हाथ पकड़ती है) बेटी, बेटी, तुम्हारे शयनकक्ष में... पता है कौन है?

अलेक्सांद्र: औरतों के शयनकक्ष में कौन होता है? आदमी!

अलेक्सांद्रा: आदमी! सींग वाले आदमी नहीं होते!

अलेक्सांद्र: कैसे नहीं होते? (प्रदर्शनकारी रूप से अपना सिर टटोलता है) तुम्हारे साथ तो मेरे भी सींग उग आएँगे!

अलेक्सांद्रा: (सब कुछ भूलकर, झगड़ालू स्वर में) तुम क्या इशारा कर रहे हो?

कात्या: बस करो तुम! मेरे यहाँ गाय है! तुम्हें क्या डर लगा, माँ? गाय है!

अलेक्सांद्रा: (हैरान होकर) गाय?

अलेक्सांद्र: व्यभिचार किया?

कात्या: तुम, माँ, क्या गाय नहीं देखा?

अलेक्सांद्रा: गाय?!

अलेक्सांद्र: व्यभिचार किया।

कात्या: गाय! तो क्या?

अलेक्सांद्रा: शयनकक्ष में?

कात्या: अभी शयनकक्ष में है, वरना जहाँ चाहे, वहाँ घूमती है!

अलेक्सांद्रा: गाय?!

अलेक्सांद्र: व्यभिचार किया।

कात्या: ठीक है, मुझे उसे खाना खिलाना है! (नंगी कोहनी से कड़ाही में दलिया छूती है) ठंडा हो गया है, लगता है, दे सकती हूँ।

अलेक्सांद्रा: गाय को?

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) और तुम क्या सोच रही थी, उसने बिल्ली से इतना दूध निकाल लिया?

अलेक्सांद्रा: गाय से?

कात्या: (क्रिस्टल फूलदान में दलिया डालती है) चलो, मैं तुम्हें अपनी गाय से मिलाती हूँ!

अलेक्सांद्रा: गाय से?

कात्या: (शयनकक्ष में जाती है, दलिया ले जाती है) बुर्योनुश्का, बुर्यासेंका, मेरी खुशी!

अलेक्सांद्रा: (उसके पीछे चलती है, फिर भी हतप्रभ) गाय?

कात्या: (शयनकक्ष की दहलीज पर) बुर्यासेंका, देखो, तुमने दादी को कैसे डरा दिया!

अलेक्सांद्रा: (अलग स्वर में) मैं तुम्हारी गाय की कैसी दादी? पति के बिना पूरी तरह पागल हो गई! गाय को क्रिस्टल में खाना परोस रही है! अब तुम उसे कॉफी भी दो!

दरवाजे की घंटी बजती है।

अलेक्सांद्रा: दूल्हा (ज़ेनिह)!

कात्या: किसका?

अलेक्सांद्रा: तुम्हारा! गाय छिपाओ! तुरंत गाय छिपाओ!

कात्या: माँ, उसका वज़न तीन सौ किलो है! अच्छा, सोचो, उसे कहाँ छिपाऊँ?

अलेक्सांद्रा: (घबराहट में) अरे, क्या करूँ, क्या करूँ? वह तुम्हें गाय के साथ नहीं ले जाएगा!

कात्या: क्यों? कहेंगे, गाय – मेरा दहेज़ (प्रिदानोए) है!

अलेक्सांद्रा: तुम कम से कम थोड़ी देर के लिए तो सामान्य हो जाओ!

कात्या: (बिना किसी गुस्से के गुनगुनाती है, वह कुछ खुश हो गई है) बूढ़ा पति, खौफनाक पति। (दरवाजा खोलती है)

रुस्लान: (केक और गुलाब के साथ अंदर आता है और कात्या और अलेक्सांद्रा को देखता है) बिन बुलाया मेहमान, तातार (ततारिन) से भी बदतर।

अलेक्सांद्रा जोर से हँसने लगती है।

रुस्लान: हालाँकि, हम तातार हैं। क्या मेरे भाई ने बताया कि हम तातार हैं?

अलेक्सांद्रा पागलों की तरह हँसती है।

रुस्लान: लेकिन केवल आधे... अंदर आने देंगे? (गुलाब और केक कात्या को बढ़ाता है)

कात्या: कृपया, अंदर आइए! (गुलाब और केक लेती है) धन्यवाद! (हाथ बढ़ाती है) कातेरिना एंड्रीवाना!

अलेक्सांद्रा: कात्या, तुम हाथ क्यों बढ़ा रही हो? तुम तो सीधे चूम लो... अब तो रिश्तेदार हैं न! वरना, बिल्कुल अजनबियों की तरह! साशा, साशा, जल्दी आओ!

अलेक्सांद्र: (रसोई से बाहर आता है और सचमुच उससे (रुस्लान से) चिपक जाता है) भाई!

रुस्लान: (उसे गले लगाता है, पीठ थपथपाता है) अरे, नमस्ते, तातार! फिर से शादी कर ली! बधाई हो!

अलेक्सांद्रा: देखो, भगवान ने मुझे कैसा मज़ेदार साला (शूरिन - पत्नी का भाई) भेजा! अच्छा, चलो, चूमते हैं!

रुस्लान: मुझे चूमा नहीं जा सकता। मैं एक जोशीला (स्ट्रास्त्नी) आदमी हूँ। साशा को जलन होगी। हम तातार, बहुत ईर्ष्यालु (रेवनिवी) होते हैं। हालिया वैज्ञानिक खुदाई (रास्कोप्का) के अनुसार, ओथेलो (ओटेल्लो) तातार निकला!

अलेक्सांद्रा: (हँसती है) कात्का, तुम्हारी किस्मत अच्छी है! कितना मज़ाकिया है! यह ओथेला कौन है?

रुस्लान: वह भी हमारा रिश्तेदार है।

अलेक्सांद्रा: अरे, कैसा है! कात्या, कम से कम तुम तो उसे चूमो!

रुस्लान: इस पर कोई आपत्ति नहीं है। रुस्लान रिफ़ातोविच!

कात्या: कृपया, कपड़े उतारिए!

अलेक्सांद्रा: (रुस्लान से) मेरी बेटी शर्मीली है।

रुस्लान: और इस पर भी कोई आपत्ति नहीं है।

अलेक्सांद्रा: वह आपको बाद में चूमेगी! देखो, कात्या, उसने तुम्हें देखा भी नहीं, और पहले ही गुलाब और केक ले आया। (रुस्लान से) इतना खर्च! कुछ एक ही लाते! क्यों खर्च किया?

कात्या: माँ! बिना खर्च के कैसे? रुस्लान शादी का प्रस्ताव (स्वातात्स्या) लेकर आया है!

अलेक्सांद्रा: कात्का, तुम क्या कह रही हो? (रुस्लान से) आप उसकी बातों पर ध्यान न दें, वह आजकल बेमतलब की बातें करती है!

कात्या: हाँ तुमने ही तो कहा – दूल्हा आएगा, दूल्हा!

अलेक्सांद्रा: मैंने बहुत कुछ कहा? मज़ाक कर रही थी!

कात्या: तुमने मुझे भ्रमित कर दिया! (रुस्लान से) तो आप मुझसे शादी करने आए हैं या नहीं?

रुस्लान: मुझे सिद्धांत रूप में पसंद है जब कोई महिला सीधे सींग पकड़ ले (मतलब मुद्दे पर आ जाए)!

अलेक्सांद्रा: तुम सब क्या – सींग, सींग!

अलेक्सांद्र: अंदर आओ, रुस्लान! यहाँ हमें दलिया खिला रहे हैं!

सब रसोई में चले जाते हैं।

कात्या केक मेज पर रखती है।

पुरुषों से छिपकर, अलेक्सांद्रा कात्या को सींगों का इशारा करती है, संकेत करती है कि वह गाय छिपाए।

कात्या: मैं जाकर फूल फूलदान में रखूँगी! (रुस्लान से) गुलाबों के लिए धन्यवाद! बहुत सुंदर हैं! (शयनकक्ष में जाती है)

अलेक्सांद्रा: (रुस्लान से) मेरी बेटी को अभी-अभी उसके पति ने छोड़ा है! उसे किसी जवान साँपिन (ज़मीश्चा) ने छीन लिया!

रुस्लान: जवान, मतलब?

अलेक्सांद्र: साँपिन! तुम हमें दूसरे साँपों के बारे में बताकर कान मत भरो, तुम अपने बारे में बताओ!

अलेक्सांद्रा: और उनके बच्चे नहीं थे! और अब कात्का के पास पूरा फ्लैट है! अब वह यहाँ अकेली है!

अलेक्सांद्र: अकेली! अच्छी बात है – अकेली!

अलेक्सांद्रा: अकेली! और इसी वजह से, उसका दिमाग थोड़ा खराब हो गया है...

कात्या कुर्सियाँ लगाकर शयनकक्ष का रास्ता रोक देती है।

अलेक्सांद्र: उसका दिमाग खराब है, पर तुम्हें शैतान (साताना) क्यों दिखता है? तुम शायद उम्मीद कर रही हो, तो ऐसी उम्मीद मत करो, मैं नहीं भूलूँगा!

अलेक्सांद्रा: और अगर परिचय के साथ अच्छी शराब (सामोगोन) हो तो?

रुस्लान: दिन में शराब?

अलेक्सांद्रा: चाहिए, चाहिए! (बैग में हाथ डालती है) हमारी – अपनी है! (दस लीटर की कैन (कनिस्त्रा) निकालती है और मेज पर रख देती है) क्या हम चारों संभाल लेंगे?

कात्या अंदर आती है और कैन देखकर हैरान रह जाती है।

रुस्लान: क्या ज़्यादा नहीं है?

अलेक्सांद्रा: तो क्या? हमें तो पैदल तार (प्रोवोलोके) पर नहीं चलना है! और नाश्ता (ज़ाकुस्का) भी है! देखो, कितना दलिया है!

रुस्लान: (कात्या से) क्या मैं एक निजी (इन्तिम्नी) सवाल पूछ सकता हूँ?

अलेक्सांद्रा: भगवान का शुक्र है, यहाँ कोई कुंवारी नहीं है! पूछो!

रुस्लान: इतना सारा दलिया क्यों? तुम इसका क्या करती हो?

कात्या: खाती हूँ। हाल ही में इसकी आदत हो गई है।

रुस्लान: और क्या, पूरा खा लेती हो?

कात्या: ज़रूर! और दूध से पी लेती हूँ! मैं स्वस्थ जीवनशैली अपनाती हूँ!

रुस्लान: यह आकर्षक है जब एक महिला किसी भी उम्र में अपना ख्याल रखती है!

कात्या: तो क्या मैं आपको किसी भी उम्र की लगती हूँ?

रुस्लान: हाँ, और मैं भी पहली ताज़गी (पेर्वोय स्वेज़ेस्ती) का नहीं हूँ, और न ही दूसरी का... यहाँ तक कि मुझे तो अशोभनीय (नेसोलिद्रो) होगा अगर आप छोटी निकलीं।

अलेक्सांद्रा: अरे, मैंने तो पिला ही दिया! बस करना तो – पीना है! और दलिया से नाश्ता करेंगे!

अलेक्सांद्र: (उदास होकर) कुछ हैं जो स्वस्थ जीवनशैली अपनाते हैं, और कुछ ऐसे हैं जो किसी भी उम्र में व्यभिचार करते हैं। और पति को दलिया से जादू (ज़ागोवारिवायुत) करते हैं!

अलेक्सांद्रा: अरे, हम सब दलिया ही क्यों कर रहे हैं! मुझे याद आया! मेरे पास क्या-क्या नहीं है! (बैगों की ओर भागती है, जार, लपेटे निकालती है) रुस्लान, कम से कम तुम तो अपनी भावी बहू (नेवेस्त्के) की मदद करो!

अलेक्सांद्र: (उसके पास जाता है) मदद करो! तुझे पहले से ही अपने पति की कमी खलने लगी है?

सब कुछ रसोई में लाते हैं।

अलेक्सांद्रा: (खोलती है) गोभी (कापुस्त्का), अचार (ओगुर्चिकी), चरबी (साल्त्से)... (गिलास लेती है) अच्छा, परिचय के लिए, पूरा (पो पोल्नोम)!

दोनों एक साथ पूरी तरह एक जैसी फुर्ती से पी जाते हैं। रुस्लान आधा पीता है, और कात्या मुश्किल से होंठों को गीला करती है।

अलेक्सांद्रा: कात्या, कात्या, पीओ, अपने आप को ऊपर मत रखो!

रुस्लान: उम्र के साथ, किसी चीज़ में संयम (वोज़्देरज़ात्स्या) भी रखना चाहिए। (कात्या से) क्या मैं आपकी सेवा कर सकता हूँ? आपकी थाली में क्या रखूँ?

कात्या: मुझे आपकी सेवा करने दीजिए! आप मेहमान हैं। (उसे डालती है)

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) हाथ हटाओ!

अलेक्सांद्रा: (मीठे स्वर में) तुम क्या, शूरिक? तुम्हें तो पसंद आ रहा था?

अलेक्सांद्र: पहले – हाँ, पर अब – अपने हाथ इस जगह पर मत फैलाओ!

अलेक्सांद्रा: अरे, मैं तो ऐसे ही। मेरे दोस्त (द्रुज़ोच्का) की...

अलेक्सांद्र: हाथ हटाओ, कहा! वह तुम्हारा दोस्त नहीं रहा! व्यभिचारिणी (ब्लुड्नित्सा)!

रुस्लान: (कात्या से) आप मुझे पसंद हैं। मुझे, आप जानते हैं, जवान लड़कियों में दिलचस्पी नहीं है। मैं उन पर बिल्कुल फिदा नहीं होता।

कात्या: यह एक गुण है। मैं हाल ही में पुरुषों में इसकी बहुत कद्र करती हूँ।

रुस्लान: बात यह नहीं है कि आप जवान नहीं हैं। आप कुछ खास हैं, दूसरों की तरह नहीं। आप थोड़ी ऊँची श्रेणी (क्लास) की हैं!

कात्या: (बिना व्यंग्य के) धन्यवाद!

अलेक्सांद्रा: और पीना? पीना?! (पिलाती है)

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) तुम्हारी चालाकियाँ गलत हैं। मैं तो पी लूँगा, पर याद रखूँगा!

अलेक्सांद्रा: (कात्या और रुस्लान से) और तुम क्यों नहीं पी रहे हो? (रुस्लान से) मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ। मेरी बेटी बिल्कुल भी तेज़-मिजाज (तेम्पेरामेंट्नाया) नहीं है। मेरे जैसी नहीं। तो मैं तुम पर उम्मीद करती हूँ।

रुस्लान: (कात्या से) और सच में, आप बिल्कुल नहीं पीतीं!

कात्या: मैं बिल्कुल नहीं पीती। आप मुझ पर ध्यान न दें!

रुस्लान: नहीं, मैं ध्यान दूँगा! और मैं आपको बताता हूँ – मुझे जवान औरतें पसंद नहीं हैं। जिनमें तरह-तरह की हरकतें (ज़ाकिदोनामी) हों!

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) फिर से तुम अपनी पुरानी हरकत पर आ गई?

अलेक्सांद्रा: साशेंका, मैं तुम्हारे लिए कितना पिघलती हूँ! मैं तो तेज़-मिजाज हूँ!

अलेक्सांद्र: हाथों पर दे दूँगा!

अलेक्सांद्रा: साशेंका, ऐसे नहीं... ऐसे तो तुम अपना तेज़-मिजाजी खो दोगे... हम ट्रेन में कैसे आए... डिब्बे के बरामदे (तम्बूरे) में, है न?

अलेक्सांद्र: बरामदे में क्या? क्या – है? बरामदे में सिगरेट पी रहा था! बेशर्म (बेस्स्त्याज़ाया)!

अलेक्सांद्रा: अरे!.. सिर घूम गया... और फिर स्लीपर (प्लात्सकार्ते) में... है न? ऊपरी बर्थ (पोल्की) से गिर गए... जवानों से ज़्यादा फुर्तीले, है न?! अच्छा हुआ कि निचली बर्थ दे दी, वरना तो अपनी तेज़-मिजाजी के कारण मर ही जाते... है न?

अलेक्सांद्र: वाह! तुम्हारी उम्र क्या है, याद करो!

अलेक्सांद्रा: चलो बाथरूम में, मैं तुम्हें बताती हूँ कि कौन किस उम्र का है! मैं तुम्हें दिखाती हूँ! मैं तुम्हें बताती हूँ कि मेरी उम्र क्या है! (ज़ोर से) बेटी! हम पापा के साथ तुम्हारा बाथरूम ठीक से देखने जा रहे हैं। लगभग पंद्रह मिनट के लिए! (अलेक्सांद्र को खींचती है)

अलेक्सांद्र: (उसके पीछे जाता है, पर अचानक वापस आता है) मैं बैठूँगा! मैंने तुमसे ज़्यादा बाथरूम देखे हैं। अब मैं बैठूँगा। और तुम, जाओ, ठंडा पानी लो! थोड़ा ठंडा!

अलेक्सांद्रा बाहर चली गई।

रुस्लान: मेरे लिए, उम्र मुख्य चीज़ नहीं है। बल्कि महिला स्वतंत्र हो, शांत हो, बिना अजीबियत के... बिल्कुल आपकी तरह!

शयनकक्ष से – एक लंबी आवाज़ – म्म्म्मूउउउ... कात्या शयनकक्ष में भागती है।

अलेक्सांद्रा: (वापस आती है) मू-मू, इसलिए मू! अच्छा, हम पीते हैं!

अलेक्सांद्र: रुस्लान, औरतों की बातों पर भरोसा मत करो, मत करो! वे तुम्हें बेवकूफ बनाती हैं! यहाँ...

अलेक्सांद्रा: (बीच में बोलती है) और देखो, साशेंका, मैंने तुम्हारा गिलास पूरा भर दिया! पूरा! जैसे तुम्हें पसंद है – पूरा! वरना, तुम कुछ नहीं कर सकते!

अलेक्सांद्र: (धमकी भरे स्वर में) मैं कर सकता हूँ, मैं वह सब कर सकता हूँ जो उचित है। पर तुम बहुत कुछ कर सकती हो! (एक घूंट में पी जाता है)

अलेक्सांद्रा: देखो, मेरा आदमी कैसा है! देखो, कितना तेज़-मिजाज है, केवल बातों में ही नहीं, बल्कि काम में भी! चलो, चलो, बाथरूम देखते हैं!

अलेक्सांद्र: भूल जाओ! अब तुम्हें कोई बाथरूम नहीं दिखेगा! (रुस्लान से) रुस्लान, सब तुमसे झूठ बोल रहे हैं। पता है उनके शयनकक्ष में कौन है?

रुस्लान: साशा, यह मुझसे संबंधित नहीं है।

अलेक्सांद्र: तुम मेरे भाई हो, और मैं चुप नहीं रह सकता। शयनकक्ष में – एक गाय है!

रुस्लान: मुझे पता है।

अलेक्सांद्र: किस बात की जानकारी है?

रुस्लान: गाय के बारे में।

अलेक्सांद्र: पहले से?

रुस्लान: शयनकक्ष में, मतलब? जैसे ही मैं अंदर आया, मुझे समझ आ गया कि गाय है, पर समझ नहीं आया – कहाँ? गंध से। और रँभाई (म्यूचाला) भी। शयनकक्ष में, मतलब?

अलेक्सांद्र: तुम अपने भाई पर हँस रहे हो। चलो, चलो, देखो तो!

रुस्लान: क्यों? क्या मैंने गाय नहीं देखी?

अलेक्सांद्रा: (हैरान होकर) और तुम्हें, रुस्लान, गाय आश्चर्यचकित नहीं करती?

रुस्लान: और क्या वह कोई खास है?

अलेक्सांद्रा: बात तो यह है कि गाय, बिल्कुल सामान्य है! बिल्कुल साधारण!

रुस्लान: और मुझे एक साधारण गाय पर क्यों आश्चर्य होना चाहिए?

अलेक्सांद्रा: बस आप यह न सोचें कि कात्या हमेशा से गाय पालती थी! पहले पति था, तीस साल साथ रहे, और उसके बाद – गाय।

अलेक्सांद्र: (अब ही सही मायने में समझ पाया है) शयनकक्ष में – गाय?

कात्या वापस आती है।

अलेक्सांद्रा: कात्का, तुम्हें गाय कहाँ से मिली?

कात्या: हमारे प्रवेश द्वार के ठीक सामने। सच में, खोदकर निकाला। उसे तो बर्फ ने ढाँप दिया था।

अलेक्सांद्रा: मेरी कात्या बचपन में सबको उठा लेती थी! और अपने पति के माता-पिता के पास ले जाती थी... पूर्व... नहीं, तब भावी... कात्या तो दादी के साथ रहती थी! और मैं शादीशुदा थी! मैंने कात्या को तब जन्मा था जब मैं बहुत छोटी थी, इतनी छोटी थी कि खुद अभी बहुत छोटी थी...

अलेक्सांद्र: (उदास होकर) दस साल में जन्मा! अगर तुमने अपनी उम्र के बारे में जो झूठ बोला है, उस पर विश्वास करें तो!

रुस्लान: व्यक्तिगत रूप से, मैं जवान लड़कियों को बिल्कुल नहीं मानता! क्या आप मुझसे सहमत हैं, कातेरिना एंड्रीवाना?

कात्या: सहमत हूँ, किस बात से सहमत हूँ, मुझे माफ़ करें, समझा नहीं?

रुस्लान: आप सब समझ गई हैं, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, आप सब समझ गई हैं, बस आप ऐसे कर रही हैं...

अलेक्सांद्रा: कात्या में कोई तेज़-मिजाजी नहीं है, बिल्कुल नहीं...

रुस्लान: चलो, खास तौर पर कातेरिना एंड्रीवाना के लिए पीते हैं!

अलेक्सांद्रा: अरे, अरे, उसने नज़र जमा ली, नज़र जमा ली! मैं तो समझ गई! कड़वा! कड़वा (गोर्को – शादी में चूमने के लिए कहने का रिवाज)!

अलेक्सांद्र: (गुस्से से) तुम समझती हो, यह तो पक्का है... तुमने अपनी पूरी ज़िंदगी बस इसी में लगा दी!

अलेक्सांद्रा: तुम क्या, साशेंका?

अलेक्सांद्र: बाद में बात करेंगे!

अलेक्सांद्रा: उसने नज़र जमा ली, नज़र जमा ली...

रुस्लान: मैं आपके, कातेरिना एंड्रीवाना, और प्यार (ल्यूबोव) के लिए टोस्ट (टोस्ट) प्रस्तावित करता हूँ!

कात्या: चलो, बस परिचय के लिए!

रुस्लान: आपके शब्द, मेरे लिए कानून (ज़ाकोन) हैं!

अलेक्सांद्रा: अरे, पहली बार देख रही हूँ कि कोई आदमी तुम पर कुछ प्रतिक्रिया (रेगिरोवाल) कर रहा है!

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) तुम पर तो बहुतों ने प्रतिक्रिया की! तुम पर कोई खाली जगह नहीं बची! सब जगह से प्रतिक्रिया कर दी! मैं तुमसे बाद में हिसाब लूँगा, रुको!

अलेक्सांद्रा: रुस्लान, मैं देख रही हूँ, आप एक असली आदमी हैं। आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं?... अगर किसी महिला के पास हमेशा पति रहा है?... क्या यह आपकी नज़र में एक कमी है? या फिर, यह बेहतर है कि महिला को अनुभव (ओप्त) हो? बहुत बड़ा अनुभव... और बहुत सारा!

रुस्लान: मुझसे पहले क्या हुआ, उससे मुझे कोई मतलब नहीं। मैं महिलाओं को उनके अतीत के लिए नहीं कोसता। प्रतिस्पर्धा (कोंकुरेंत्सिया) मुझे परेशान नहीं करती। मैं अब भी एक महिला को अच्छी तरह से नुकसान (उरोन) पहुँचा सकता हूँ! क्या मेरी बातें आपको, कातेरिना एंड्रीवाना, परेशान नहीं कर रही हैं?

अलेक्सांद्रा: उसे क्यों शर्माना चाहिए? वह कोई कुंवारी नहीं है! लगभग चालीस साल की हो गई है!

कात्या: क्या चालीस, माँ?

अलेक्सांद्रा: (महत्वपूर्ण अर्थ से कात्या को धकेलती है) और सच में, मुझे याद आया, तुम्हें चालीस की हो गई... अभी-अभी हुई हो...

अलेक्सांद्र: बस, इसी समय हुई!

कात्या: मुझे तो, माँ, पचास की हो गई, पूरी हो गई!

अलेक्सांद्रा: देखो, वह हमेशा अपनी उम्र बढ़ा-चढ़ाकर बताती है!

रुस्लान: क्यों?

अलेक्सांद्रा: शान (कोकेटनिचाएत) दिखा रही है!

रुस्लान: हम तातार, महिलाओं के मामले में बहुत बुरे (ज़लीये) होते हैं!

अलेक्सांद्र: (पिघल गया) हम तातार, महिलाओं के मामले में बस घोड़े (कोनी) हैं!

अलेक्सांद्रा: तुम बरामदे में बिल्कुल घोड़े की तरह थे! इतने घोड़े, इतने घोड़े, बस चंगेज़-खान (चिन्गिज़-खान)!

रुस्लान: (पहले से ही नशे में है) और आप मुझे बहुत पसंद आ गईं, कातेरिना एंड्रीवाना! (उसे गले लगाता है) मैं तो... मैं आपको... अभी... अभी नुकसान पहुँचा सकता था!

कात्या: (हट जाती है, लेकिन शालीनता से) कैसा नुकसान, समझ नहीं आया?

अलेक्सांद्रा जोर से हँसती है।

कात्या शयनकक्ष में चली जाती है। अलेक्सांद्रा चीखते हुए: "कात्या, कात्या, तुम क्या कर रही हो?" – उसके पीछे।

अलेक्सांद्र: तुम, भाई, मुख्य बात यह है कि नाश्ता (ज़ाकुसिवाय) करो, वरना तुम शराब के लिए मजबूत नहीं हो। कैसे पता न चले कि शराब सबसे नाजुक पल में तुम्हें निराश न कर दे!

रुस्लान: (कुछ आक्रामक होकर, उलझने को तैयार) क्या तुम कह रहे हो कि मैं किसी महिला को नाराज (ओबिदेत) नहीं कर सकता? अगर कातेरिना एंड्रीवाना सिर्फ इशारा कर देती, तो मैं उसे इतना नाराज करता, वह खुश हो जाती! अगर मुझे पक्का पता होता कि वह मना नहीं करेगी!

अलेक्सांद्रा: (बाहर कूदती है) और, हम कब मना करती हैं?

अलेक्सांद्र: यह तुम्हें पेशकश नहीं की जा रही है!

रुस्लान: मैं कातेरिना एंड्रीवाना को निराश नहीं करता!

अलेक्सांद्रा: (हँसती है) और उसके शयनकक्ष में गाय है! (अलेक्सांद्र का हाथ पकड़कर खींचती है) चलो, बाथरूम दिखाती हूँ!

अलेक्सांद्र: ज़रूर पड़ी है!

अलेक्सांद्रा: तुम अपने भाई को, और मेरी बेटी को देखो। वह तो पूरी तरह जुट गया है, और वह बस... हमें दोनों को थोड़ा हटना होगा! आधे घंटे के लिए, और वह उसे... (ज़ोर से) काल्का, तुम कहाँ गायब हो गई? जल्दी – यहाँ आओ!

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) मैं तुम्हें एक महीने से जानता हूँ, पर तुमसे अभी तक इसके अलावा कुछ नहीं सुना! टीवी पर भी, तुम बस यही देखती हो! तुम्हारी उम्र क्या है?

काल्या वापस आती है, लेकिन रसोई के मेहराब (आर्च) में ही खड़ी रहती है।

अलेक्सांद्र: काल्या, उदाहरण के लिए, आपकी व्यक्तिगत उम्र क्या है?

काल्या: मेरी? (जवाब देने को होती है)

अलेक्सांद्रा: (बीच में बोलती है, झगड़ालू स्वर में) कात्का! माँ से विश्वासघात (प्रेदावत) करने की हिम्मत मत करना!

अलेक्सांद्र: उदाहरण के लिए, क्या आप पचास की हो चुकी हैं, या अभी भगवान ने बचा रखा है?

अलेक्सांद्रा: कात्का, चुप रह!

कात्या: माँ, तुम क्यों हंगामा कर रही हो?

अलेक्सांद्रा: चुप रह! मैं श्राप (प्रोक्ल्यानु) दूँगी! (कात्या को रसोई से बाहर धकेलती है)

अलेक्सांद्र: (उनके पीछे) बस करो, मुझसे बेवकूफ (दुराका) मत बनाओ! (रुस्लान से) शादी कर ली, कहते हैं! कभी ठीक से खाना नहीं बनाया! खुद अपने कपड़े धोता हूँ! हर जगह – गंदगी! और यह इठलाती है! नंगी!!! जब से इससे शादी की है, पूरे गाँव (पोस्योलोक) में मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, मुझे चैन नहीं!

अलेक्सांद्रा गर्व से रसोई में प्रवेश करती है।

अलेक्सांद्र: (उसके चेहरे पर) तुम्हें कौन चाहता है, बूढ़ी रंडी (लाहुद्रा स्ताराया)? तुमसे तो रेत (पेसोक) झड़ रही है, और तुम अपनी पिछवाड़े (ज़ाद्रित्सेय) हिला रही हो!

अलेक्सांद्रा: मैं – बूढ़ी रंडी?! मुझसे रेत झड़ रही है?! मैं – किसी काम की नहीं? (गर्व से सीधी होती है) मैंने तो तुम्हें सौ सींग जड़ दिए (मतलब बहुत बेवफाई की)!

अलेक्सांद्र: अरे, विषैली साँप (ज़मेया पोगानाया)! अच्छा, संभल जा! मैं अब तुम्हारा सारा तेज़-मिजाजी निकाल बाहर करूँगा! (बहुत दृढ़ता और गुस्से से उस पर झपटता है)

अलेक्सांद्रा: मार डाला!!!

अलेक्सांद्र जलती हुई चीज़ (ओश्पारेन्नी) की तरह पीछे हट जाता है।

कात्या: रुस्लान रिफ़ातोविच! अपने भाई को तुरंत यहाँ से ले जाइए!

रुस्लान: (पहले से ही बहुत नशे में है) उसे पीटने दो! सवारी (कातात्स्या) पसंद है, तो स्लेज (सानोच्की) ढोना (वोज़ित) भी पसंद करो!

अलेक्सांद्र फिर से झपटता है।

अलेक्सांद्रा: अच्छे लोग, मदद करो!

कात्या: बस! मैं पुलिस (मिलित्सियु) बुला रही हूँ! (रिसीवर पकड़ती है)

अलेक्सांद्र अलेक्सांद्रा का गला पकड़ता है, वह छटपटाती है और घरघराहट करती है।

कात्या: (अलेक्सांद्र को अलेक्सांद्रा से अलग करती है) माँ को मत छुओ! माँ, उससे दूर हटो! और तुम सब – यहाँ से बाहर निकलो!

अलेक्सांद्रा पीछे हटती है और रुस्लान के पीछे छिप जाती है।

अलेक्सांद्र: कातेरिना एंड्रीवाना, आप एक सकारात्मक महिला हैं, लेकिन हमारे परिवार में हस्तक्षेप (नेज़ाते) न करें, हम तुम्हारे बिना ही सुलझा लेंगे! (अलेक्सांद्रा की ओर बढ़ता है)

रुस्लान: (अलेक्सांद्र से) अपने घर पर खुद सुलझाओ! और यहाँ – मैं ऐसा मुक्का मारूँगा (ज़ाकाचु व लोब)! बैठो और चुप रहो!

अलेक्सांद्रा: (अलेक्सांद्र से) बैठो, कहा तो! वरना खुद को मुक्का मिलेगा और पुलिस में जाना पड़ेगा!

अलेक्सांद्र: (एक कोने में बैठ जाता है, उदास होकर) कोई बात नहीं, बैठूँगा... कोई बात नहीं, पहुँच जाऊँगा...

कात्या बाहर जाती है।

अलेक्सांद्रा: (रुस्लान से) देखो, आप हर तरह से कितने अच्छे आदमी हो! अच्छा, हम अब आपके साथ पीते हैं, और यह कोने में बैठा रहे! वरना कैसा... (शराब पिलाती है) और आप, रुस्लानचिक, कैसे हो...

रुस्लान: (शराब लेता है) कैसे?

अलेक्सांद्रा: कमांडर (कोमांदिर)। कोई महिला, जैसे ही आपको देखती है, सोचती है – कमांडर, तो उम्मीद करती है कि उसे कोई आदेश (कोमांडोवाली) देंगे! और अभी सब कुछ करेगी, अभी। आप ऐसे कमांडर हैं। अरे, कितने कमांडर हैं! है न, कात्या? (पता चलता है कात्या नहीं है: ज़ोर से) कात्या! कात्या! (कात्या के पीछे जाती है)

अलेक्सांद्र: अच्छा, कैसी घटिया (गादिना) औरत है! सबसे सामान्य शब्द बोलती है, पर सब कुछ उसके बेशर्मी से (पो बेस्स्त्यझेमु) निकलता है।

रुस्लान: तो पता चला, तुम चूक गए, भाई! क्यों शादी की?

अलेक्सांद्र: उसने मुझे पूरी तरह जादू (ज़ामोरोचिला) कर दिया! कभी शराब पिलाती है, कभी मेरी तारीफ करती है, पूरी तरह जादू कर दिया! और मैं होश खो बैठा!

रुस्लान: तुम्हारे पास होश था ही कभी नहीं! तुम महिलाओं के मामले में हमेशा बेवकूफ ही रहे!

अलेक्सांद्र: पर, तुम्हारी तरह, बीमार (ख्वोर्ह्) से शादी नहीं की। और तुम तो दया (ज़ालोस्ती) से शादी करते रहे, और बाद में सिर्फ दवाइयों पर पैसे झोंकते रहे!

अलेक्सांद्रा: (कात्या को लाती है) तुम अपनी गाय के पास क्यों चिपकी रहती हो?

कात्या: तुम मुझसे क्या चाहती हो, माँ?

अलेक्सांद्रा: देखो तो, तुम्हारे सामने कैसा कमांडर है! मार्शल (मार्शल)!

अलेक्सांद्र: रुस्लान, उसकी बात मत सुनो! वह ऐसे गाती (पोयोत) है, गाती है, और बाद में बदचलनी (बेज़ोब्राज़िए) पर उकसाएगी!

रुस्लान: मैं – तुम नहीं हूँ! मैं महिलाओं के साथ सही व्यवहार करता हूँ। मेरी महिला को अपनी जगह पता है!

कात्या: बस, बहुत हो गया! मुझे माफ़ करें, लेकिन मुझे काम है! तुम, माँ, लेट जाओ, सफर से आराम करो। और आप लोगों को मैं जाने के लिए कहती हूँ!

रुस्लान: (तुरंत खड़ा हो जाता है) कातेरिना एंड्रीवाना, अगर कुछ गलत हुआ तो माफ़ कर दें। यह आपकी निजी तौर पर नहीं है। मैं आपका और भविष्य में भी सम्मान करने का इरादा रखता हूँ, बस मैंने पी लिया था।

कात्या: आपने पी लिया, तो अब जाइए और नशा उतारिए!

रुस्लान: चलो, तातार! बताओ कैसे जी रहे हो।

अलेक्सांद्रा: तातार कहाँ जाएगा? कात्या, तुम अपने पति को घर से निकाल रही हो? माँ के साथ ऐसा व्यवहार?

कात्या: अलेक्सांद्र रिफ़ातोविच रह सकते हैं, लेकिन कोई झगड़ा नहीं, माँ! और शराब हटाओ!

अलेक्सांद्रा: और इस शराब की किसे ज़रूरत है? परिचय के लिए पिया, और अब चाय पीनी चाहिए।

रुस्लान: (पहले से ही कपड़े पहने हुए) साशा, चलो चलते हैं! कातेरिना एंड्रीवाना ऐसी महिला नहीं हैं जिनके साथ शराब पीकर मस्ती (प्यानस्त्वोवात) करें। यह महिला, अलग है।

अलेक्सांद्र: और आप भी मुझे माफ़ करें, कात्या! इतना अप्रत्याशित कि माँ ऐसी है, और बेटी ऐसी है। चलो, भाई! मैं तुम्हें बताता हूँ। बताने के लिए कुछ है, हालाँकि इसके साथ केवल एक महीना ही गुज़ारा है।

अलेक्सांद्रा: कहाँ? कहाँ? और चाय कौन पिएगा? मैंने तो रखी ही है!

रुस्लान: मेरे घर चाय है।

अलेक्सांद्र: चलो ही! तुम खुद चाय पियो बिना हमारे!

अलेक्सांद्रा: कात्या, क्या सच में तुम्हें चाय पिलाने में दिक्कत है? आदमी ने केक पर पैसे खर्च किए, और तुम केक अपने पास, और उसे – बाहर!

रुस्लान: केक, इससे कोई मतलब नहीं। केक आप खुशी से खाएँ!

अलेक्सांद्रा: पानी तो उबल गया है। उन्हें चाय पीने दो, और फिर जाने दो, होश में आकर। वरना कुछ और हो जाए?

रुस्लान: कुछ नहीं होगा! इसके विपरीत, सब ठीक है। अलविदा!

कात्या: मैंने जल्दबाजी (पोगोर्याचिलास) में कहा। चाय पी लें, मैं आपको आमंत्रित करती हूँ!

रुस्लान: नहीं जानता... आप शिष्टाचार से (इज़ वेज़्लिवोस्ती) कह रही हैं...

अलेक्सांद्रा: कात्या, मना (उगोवारिवाय) करो, मना करो... आदमी ऐसे होते हैं, उन्हें हमेशा मनाना पड़ता है!

रुस्लान: मैं तो ज़रूर, पर मैं आप पर बोझ (त्यागोस्त) नहीं बनना चाहता... अगर सिर्फ आधे घंटे के लिए...

अलेक्सांद्रा: बैठो, बैठो, चाय पीओ! केक के साथ चाय – बहुत सभ्य (कुल्तुर्नो) है। और तुम, कात्या, गुलाबों को मेज के बीच में रख दो! हम बैठेंगे और बात करेंगे, जैसे फिल्मों (किने) में!

कात्या बाहर जाती है।

अलेक्सांद्रा: (अलेक्सांद्र से, आँसुओं के साथ) देखो, तुम्हारे लिए केक का टुकड़ा! देखो, मैं तुम्हारे लिए बीच से काटूँगी, आड़ू (पेर्सिकोम) के साथ!

अलेक्सांद्र: मुझे याद है, याद है... मैं तुमसे पूछताछ (डोप्रोस) करूँगा...

अलेक्सांद्रा: यह कैसा हो गया? जैसे ही मैं तुम्हारे पास बैठती हूँ, मेरा सिर चकराने लगता है, चकराने लगता है... तुममें ऐसा क्या है कि मैं पूरी तरह चकरा जाती हूँ, चकरा जाती हूँ? तुममें ऐसा क्या है?

अलेक्सांद्र: यह सभी आदमियों में होता है!

अलेक्सांद्रा: सभी में नहीं, सभी में नहीं! सिर्फ तुम में!

अलेक्सांद्र: और तुम्हें कैसे पता? सबको आजमा (पेरेप्रोबोवाला) लिया है?

अलेक्सांद्रा: सबको नहीं, सबको नहीं!

अलेक्सांद्र: देखा, चिपक गई... लोगों के सामने शर्म आती है!

रुस्लान: हाँ, तुझे तो जोशीली (ज़ावोद्राया) मिल गई... पत्नी नहीं, बल्कि कोई चिरस्थायी मशीन (वेच्नी द्विगातेल) है।

अलेक्सांद्रा: (रुस्लान से) और आप, बेहतर होगा अपने भाई से उदाहरण (प्राइमर) लें! वह – मेरे पास बिना किसी केक के आया, पचास रूबल उधार लेने आया, और बस... और अगली सुबह हमने रजिस्ट्रेशन (ज़ारेगिस्त्रिरोवालिस) करवा लिया। और एक महीने से सब कुछ चक्कर, चक्कर है...

अलेक्सांद्र: चक्कर, चक्कर, पर पचास रूबल तो दिए ही नहीं!

रुस्लान: होश आया!

अलेक्सांद्रा: और आपने खर्च किया, और कितनी देर कात्या के पास बैठे हैं, पर ऐसे ही चले जाओगे! और आपने तो नज़र जमा ली है...

अलेक्सांद्र: और कहाँ? रसोई में – हम हैं, उसके शयनकक्ष में – गाय है।

अलेक्सांद्रा: गाय – बाहर! गाय यहाँ सब कुछ बिगाड़ रही है। यहाँ तो आदमी को प्राथमिकता (स्लेदुएत) है! आप दिखाइए कि आप – एक आदमी हैं! आप अपने आप को हर तरफ से दिखाइए!

कात्या गुलाबों के बचे हुए हिस्से के साथ अंदर आती है।

कात्या: देखो! गुलाब चबा डाले!

अलेक्सांद्रा: बस, छी, इस गाय पर!

कात्या: मुझे चिंता हो रही है! कुछ करना होगा! सारे गुलाब चबा डाले!

रुस्लान: कातेरिना एंड्रीवाना, मैं आपके लिए इतने गुलाब ला दूँगा!

कात्या: वे रसायन (ख़िमियेय) से भरे हैं! कहीं बुर्योनुश्का को ज़हर न हो जाए!

रुस्लान: आप बिल्कुल चिंता न करें, कातेरिना एंड्रीवाना! गाय कभी-कभी ऐसी चीज़ें खा जाती है! कीलें (ग्वोज़्दी) खा जाती है!

अलेक्सांद्रा: अंधेरा होते ही – गाय को बाहर, और ले जाओ कहीं दूर!

कात्या: माँ!

रुस्लान: बिल्कुल नहीं! यह गाय है, कोई मामूली कुत्ता (शाव्का) नहीं!

अलेक्सांद्रा: गाय गाँव में रखते हैं! और, वैसे, आप मदद कर सकते थे, रुस्लान रिफ़ातोविच! आपके तो गाँव में रिश्तेदार हैं!

रुस्लान: यहाँ किया जा सकता है। क्या आप सहमत होंगी, कातेरिना एंड्रीवाना, गाय को गाँव भेजने के लिए? और कीमत के बारे में मैं बात करूँगा, सब ठीक से, ताकि आपको नुकसान न हो।

कात्या: मैं बुर्योन्का को नहीं बेचूँगी।

अलेक्सांद्रा: नमस्ते! कालीन, क्रिस्टल और बीच में – गाय! किसी को बताओगी – हँसी उड़ाएँगे! तुम्हारे यहाँ पुलिस भी आएगी! तुम्हें पागलखाने (दुर्दोम) ले जाएँगे!

कात्या: बेशक, गाय के लिए गाँव बेहतर है। लेकिन, क्या करूँ, जब ऐसा हो गया?

रुस्लान: तो, क्या मैं बुर्योन्का को गाँव, अपनी चाची (त्योत्के) के पास ले जाऊँ?

कात्या: नहीं, उसे दयालुता (दोब्रोता) चाहिए!

रुस्लान: इससे ज़्यादा दयालु नहीं मिलेगी! चाची, हालाँकि बहुत बूढ़ी हैं, पर हार नहीं मानतीं, पशु (स्कोतिनु) पालती हैं! उनके पास, तीन गाय तक होती हैं! और सूअर, और खरगोश...

कात्या: क्या वह जानवरों से प्यार करती हैं?

रुस्लान: हमारा पूरा परिवार प्यार करता है!

अलेक्सांद्र: (गुलाब लिए हुए) मैं व्यक्तिगत रूप से सिर्फ गोमांस (गोव्यादिनु) और मटन (बारानिनु) पसंद करता हूँ! (अलेक्सांद्रा से) चलो, बाथरूम में!

दोनों चले जाते हैं।

रुस्लान: चाची से बस यही सुनने को मिलता है – मेरी प्यारी (कासातोचकी), मेरी प्यारी (मिलेंकी)! और कुछ महीनों में घास उग आएगी! हम आपकी बुर्योन्का को चरागाह (लुझोक) पर छोड़ देंगे। उसे कितनी खुशी होगी! यहाँ – क्या है? न धूप, न खुली जगह! और वहाँ – जहाँ चाहो चरो! आपकी बुर्योन्का को आज़ादी (वोल्या), हवा (वोज़्दुह)! एक बैल (बिचकोम) के साथ मिलाएँगे, बछड़ा (टेलोनोच्का) पैदा करेगी...

कात्या: और क्या उसे मिलने जाया जा सकेगा?

रुस्लान: कितनी भी बार! कभी भी ले जाऊँगा। स्नानघर (बान्के) में भाप लेंगी। वहाँ एक नदी (रेच्का) अभी भी बची है। उसमें मछलियाँ! हम डायनामाइट (दिनामितोम) से मारते हैं! मशरूम के लिए, अगर आपको पसंद है... और वहाँ से आप खट्टी क्रीम (स्मेतांकी), मक्खन (मास्लित्सा), और जो चाहिए ले आएँगी। फ्रिज पूरा भर देंगी। सब अपना, दुकान के सामान से कोई मुकाबला नहीं।

कात्या: मैं बुर्योन्का से जुड़ गई हूँ, आप जानते हैं... मैंने गायें जीवन में केवल एक बार देखी हैं... एक बार, एक पायनियर कैंप (पायोनेर्सकोम लागेरे) में, मैंने नींद में सुना – मू-उउ... मैं कमरे से बाहर भागी – और बाड़ (ज़ाबोरु) की ओर... और सूरज अभी-अभी उगा था, ओस (रोसा), कोहरा (तुमान)... और गायें धीरे-धीरे गुज़र रही थीं... एक बूढ़ा चरवाहा (पास्तुख) चाबुक (ख्लिय्स्तोम) चटका रहा था, ज़मीन पर चट, चट... और मुझे अचानक, पता है, ऐसा लगा – यह मेरी मातृभूमि (रोदिना) है, और मैं रो पड़ी... बस ऐसे ही... अजीब है न?

रुस्लान: इसमें अजीब कुछ नहीं, और सब सही है। गाय – यह अनादि काल से है, यह हमारी है...

कात्या: मेरी बुर्यास्या... मैं उससे लग जाती हूँ, और वह इतनी बड़ी, गर्म होती है... मैं उसके सींगों के बीच खुजलाती हूँ... और गर्दन (शेय्कु) चाहती है, पसंद करती है...

रुस्लान: वे सब प्यार (लास्कु) पसंद करते हैं।

कात्या: और वह, मानो अपनी (रोद्राया) हो... वह मुझसे प्यार करती है... समझते हैं?

रुस्लान: कैसे नहीं समझूँ? मैं खुद ऐसा ही हूँ...

अलेक्सांद्रा: (एक गुलाब लिए वापस आती है) हद हो गई! गलियों में गायें पड़ी रहती हैं! और किसी ने नहीं उठाया! पर मेरी कात्का को हमेशा सब कुछ चाहिए!

रुस्लान: और सही किया कि उठाया! गाय – कोई बिल्ली नहीं है, जिससे न दूध, न मांस। कातेरिना एंड्रीवाना – एक गंभीर (सिर्योज़्नाया) महिला हैं, और उनके काम ठोस (सोलिद्रीये) हैं।

अलेक्सांद्रा: और गाय को कहाँ रखोगी, अगर आप न होते? आप गाय को कब ले जाओगे यहाँ से?

रुस्लान: अगले शनिवार को भी ले जा सकता हूँ!

कात्या: और गायें कितने साल जीवित रहती हैं?

रुस्लान: इस मामले में आप मुझ पर पूरा भरोसा कर सकती हैं! मुझे हमेशा पता होता है कि कब समय आ गया... मैं आपकी बुर्योन्का को किसी और को नहीं सौंपूँगा, मैं खुद उसका वध (रेज़ात) करूँगा।

कात्या उठती है।

रुस्लान: मैं, अपनों के लिए, अच्छे से करूँगा। बूचड़खाने में, सब कुछ ठीक-ठाक (कोये-काक) होता है, पर आपके लिए मैं करूँगा। पहले, मैं आपकी बुर्योन्का के सिर पर हथौड़े (मोलोत्कोम) से मारूँगा... (कात्या के सिर पर दिखाता है) यहाँ पर। इतना मारूँगा कि मारूँगा तो नहीं, बल्कि बेहोश (प्रिब्यु) कर दूँगा... (शेखी बघारते हुए) वह गिरेगी तो ज़रूर, पर खुद, फिर भी, जीवित होगी... और मैं उसकी खाल (शकुरु) जीवित ही उतारूँगा... जल्दी-जल्दी नहीं, सावधानी से...

कात्या: इसमें बहुत दर्द होगा!

रुस्लान: (कात्या के डर से खुश होकर, अहंकार से) इसमें मैं आपसे ज़्यादा जानता हूँ और आपकी बात, बेशक, नहीं मानूँगा! वरना – गुणवत्ता (काचेस्त्वा) नहीं आएगी!

अलेक्सांद्रा: देखो – असली आदमी, सब कुछ जानता है, हर काम में माहिर है!

रुस्लान: संक्षेप में, आप अपनी बुर्योन्का का मांस खाएँगी, और फिर किसी और का मांस नहीं चाहेंगी... आपने ऐसा कभी नहीं चखा होगा, मैं गारंटी देता हूँ...

अलेक्सांद्रा: और उसमें कितना मांस है! क्या जीवन है – मांस सीधे गली में पड़ा है! अच्छा है कि सब इतना अच्छा हुआ। तो, आप इस गाय को सीधे शनिवार को ले जाइए!

कात्या: मैं बुर्योन्का नहीं दूँगी!

अलेक्सांद्रा: अरे, उसके यहाँ हफ्ते में सात शुक्रवार (सेम प्यात्निस) होते हैं! पर कहाँ रखेगी, कहाँ?

कात्या: यहीं रहेगी! हमें साथ अच्छा लगता है!

अलेक्सांद्रा: गाय के साथ अच्छा? तुम्हारा इलाज (लेचित्स्या) कराना चाहिए!

रुस्लान: नहीं, कातेरिना एंड्रीवाना, फ्लैट में गाय नहीं रह सकती। मछलियाँ (रय्बोक) पाल लें, या कुछ ऐसा... पर गाय – नहीं... बिना चलने के उसके पैर भी सुन्न (ओतमुत्स्या) हो जाएँगे, और जल्द ही वह खुजली (ज़ापारशिविएट) करने लगेगी और धूप के बिना मुरझा (ज़ाचाखनेत) जाएगी...

अलेक्सांद्रा: देखो, सुनो क्या कह रहे हैं, सुनो!

कात्या: मैं अपना फ्लैट गाँव (डेरेव्ने) में एक घर से बदल लूँगी! मैं गाँव के स्कूल में नौकरी कर लूँगी, फ्रेंच पढ़ाऊँगी... मैं सुबह-सवेरे उठूँगी, बुर्योन्का का दूध निकालूँगी...

अलेक्सांद्रा: क्या? तुममें से कोई समझता है कि वह क्या कह रही है? क्या कह रही हो?

कात्या: फ्लैट को गाँव में एक घर से बदल लूँगी।

अलेक्सांद्रा: फ्लैट बदलेगी! है न? क्या मज़ाक है! है न? यह तुम्हें कौन करने देगा, है न? तुम्हें तो पागलखाने भेजना चाहिए, कम से कम!

कात्या: और मुझे किससे पूछना चाहिए? फ्लैट मेरा है! मैं अपनी ज़िंदगी के बारे में खुद फैसला कर सकती हूँ, मैं कोई बच्ची नहीं हूँ, मुझे तो तिरपन साल हो गए हैं!

अलेक्सांद्र: (वापस आता है) तिरपन! सब गुप्त बातें सामने आ जाती हैं!

अलेक्सांद्रा: (उसे टाल देती है) रुको, तुम! यानी कैसे – खुद? क्या तुम अकेली हो? क्या तुम अनाथ (सिरोता) हो? मैं तुम्हें सांत्वना देने आई हूँ! अपने पति को उसकी जगह से हटा दिया! मैंने सोचा – तुम खुश होओगी! जिंदगी भर अलग-अलग, तो कम से कम बुढ़ापे (न स्तारोस्ती) में, बेटी के पास रहूँगी! कम से कम, बुढ़ापे में बेटी मेरी देखभाल करेगी! कम से कम याद करेगी कि उसकी एक माँ है! वरना, उसके पति ने उसे छोड़ दिया, तो वह उसके माता-पिता को अपनी सगी माँ से ज़्यादा याद करती है! उसके लिए पराये मुर्दे (पोकोयनिकी) जीवित माँ से ज़्यादा करीब हैं!

कात्या: माँ, तुमने मुझे तीन साल की उम्र में चचेरी दादी (द्वोयुरोद्नुयु बाबुष्कु) के पास छोड़ दिया था! और हर साल नहीं मिलने आती थीं!

अलेक्सांद्रा: अरे – बेशर्म, माँ को उसके किए पर ताना (पोप्रेकाएत) मारती है! अरे – बेशर्म! और तुम मेरी जिंदगी जानती हो? मेरी जिंदगी जानती हो? तुम्हें एक बार एक आदमी ने छोड़ा, और तुम पागल हो गई, पर मुझे कितनी बार छोड़ा गया! और मैं हमेशा कोशिश करती रही कि तुम्हारा पिता हो! क्या मेरी जिंदगी आसान थी? और अब, मैं हमेशा के लिए आ गई हूँ! और तुम्हारे लिए पिता ले आई हूँ... ताकि तुम्हारे पास माँ और पिता दोनों हों...

कात्या: तो, हम सब मिलकर गाँव में रहेंगे!

अलेक्सांद्रा: यानी, मेरी अपनी माँ को गाय के हिसाब से ढलना पड़ेगा? यानी, मेरी जिंदगी ऐसी हो जैसे तुम्हारी गाय को सुविधाजनक हो? यह तो, किसी को बताओ?

कात्या: माँ, बाद में बात करेंगे! परेशान मत हो – बात करेंगे।

अलेक्सांद्रा: मैं अभी पागल (उमा) नहीं हुई हूँ कि गाय के बारे में बातें करूँ! जानवर (स्कोतिनु) को माँ से ऊपर रखा है! तेरी बेशर्म आँखें! जब तक यहाँ जानवर राज करता है, मेरा पाँव नहीं पड़ेगा! अभी बाहर निकलो, और अब मेरी कोई बेटी नहीं! बस!

रुस्लान: (अलेक्सांद्र से) चलो, साशा, उन्हें सुलझाने दो, वरना हम यहाँ क्यों हैं?

अलेक्सांद्रा: अरे, मत जाओ, अरे, मर रही हूँ, अरे, दिल ने जकड़ा (सख़्वातिलो)... अरे, बेटी माँ को कब्र (ग्रोब) में धकेल रही है! अरे, इसी समय मर रही हूँ!

कात्या: क्या हो रहा है? (पुरुषों से) उसे सोफे पर लिटा दो! मैं अभी एम्बुलेंस (स्कोरुयु) बुलाती हूँ! रुस्लान और अलेक्सांद्र अलेक्सांद्रा को बाजू से पकड़कर सोफे की ओर ले जाते हैं। कात्या फोन पकड़ती है।

अलेक्सांद्रा: (खुद को सोफे तक ले जाने देती है, पर हर समय विलाप (प्रिचिताएत) करती है) अरे, मुझे अस्पताल (बोल्नित्सु) में डालना चाहता है! माँ को मरने दो, पर खुद अपनी गाय के साथ यहाँ हँसेगी!

कात्या: माँ, बकवास (एरुन्डी) मत बोलो! तुम्हें डॉक्टर की ज़रूरत है!

अलेक्सांद्रा: (पहले से ही सोफे पर) मैं किसी डॉक्टर को नहीं आने दूँगी! यहीं मरूँगी! तुम्हारी गाय के पास!

कात्या: अभी, माँ, रुको! (बाहर भागती है और पड़ोसी (सोसेद्नुयु) के दरवाजे की घंटी बजाती है)

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा से) तुझे क्या हो गया?

अलेक्सांद्रा: क्या-क्या? मर रही हूँ! गाय की वजह से!

अलेक्सांद्र: मरने से पहले तो बता, तेरी उम्र क्या है?

अलेक्सांद्रा: तुझे नहीं बताना, मेरी उम्र किसी को नहीं!

रुस्लान: नहीं मरेगी!

अलेक्सांद्रा: और तुम्हें कैसे पता?

रुस्लान: मैं तीन बार विधुर रहा हूँ। अनुभव है।

अलेक्सांद्रा: मरूँगी, मरूँगी, और कैसे मरूँगी!

अलेक्सांद्र: (ताना देता है) अच्छा, जी ली, और अब वक्त आ गया, शर्म करो!

अलेक्सांद्रा: मुह मत खोलो (ने कारकाय)! अभी तुम्हें भी मात दे दूँगी (पेरेज़िवु)!

अलेक्सांद्र: (रुस्लान से) उसने बहलाया – बेटी के पास, बेटी के पास, शहर में रहेंगे, अमीर फ्लैट में!

अलेक्सांद्रा: और, यहीं रहेंगे! किसी गाय को मैं क्यों हारूँ (उस्तुपिला)! रहेंगे, रहेंगे!

नीना दरवाजा खोलती है।

कात्या: जल्दी, जल्दी, मदद करो!

नीना: (डरकर) बुर्योन्का को कुछ हो गया?

कात्या: माँ को तबियत खराब है!

नीना: किसकी?

कात्या: मेरी!

नीना: और वह कहाँ है?

कात्या: यहाँ है! चलो!

नीना: (जम्हाई लेती है) और कहाँ से आई?

कात्या: नीना! शायद उसे दिल की तकलीफ है!

नीना: (शांति से) आई, आई, क्या हड़बड़ी है? (अपने फ्लैट में गायब हो जाती है)

अलेक्सांद्र: (अलेक्सांद्रा को ताना मारता है) यहाँ रहेंगे, यहाँ... क्या हमें यहाँ कोई पूछता है?

अलेक्सांद्रा: मैं उसकी माँ हूँ! मैं उसे सताकर (सज़िवु) मार डालूँगी!

अलेक्सांद्र: गाय उसकी माँ और पिता है, और तुम बेकार (बेज़ नादोबनोस्ती) हो!

नीना मेडिकल बैग (साक्कोयाज़ोम) के साथ बाहर आती है, और कात्या के साथ मिलकर कात्या के फ्लैट में प्रवेश करती हैं।

अलेक्सांद्रा: अरे, अरे, मर रही हूँ, किसी डॉक्टर की ज़रूरत नहीं, मुझे शांति से मरने दो!

नीना: यह शोर क्या है, और लड़ाई (ड्राकी) क्यों नहीं है?

कात्या: माँ, यह मेरी पड़ोसन है। नर्स (मेदसेस्त्रा)। वह तुम्हें देखेगी और बताएगी कि क्या है।

अलेक्सांद्रा: अरे, मुझे कुछ नहीं चाहिए, नहीं चाहिए!

नीना: रोगी (पात्सिएन्त्का), मनमानी (काप्रिज़निचाट) बंद करो! जो मरता है, वह चुपचाप लेटा रहता है, और तुम तो बहुत ज़ोरदार (गोलोसिस्ताया) हो। (अलेक्सांद्रा के पास बैठती है) हाथ दो!

अलेक्सांद्रा: नहीं दूँगी! जाओ, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया!

कात्या: माँ, मैं अभी एम्बुलेंस बुलाती हूँ!

नीना: (अलेक्सांद्रा से) मैं तुम्हें कुछ नहीं करूँगी, बस नाड़ी चेक करूँगी। (उसकी कलाई पकड़ती है) सब चुप! (उसका हाथ पकड़ती है और घड़ी देखती है) तिरसठ! (हाथ छोड़ती है) नाड़ी एक अंतरिक्ष यात्री (कोस्मोनावता) की तरह है। (कात्या से) आस्तीन ऊपर करो! ब्लड प्रेशर (दाव्लेनिए) मापेंगे। (ब्लड प्रेशर मापने का यंत्र (तोनोमेत्र) निकालती है) तुम्हारे यहाँ तो बहुत खुशबू (अरोमात) है!

अलेक्सांद्रा: (चिढ़कर) और कैसे? जानवर (स्कोतिनु) तो पाल रखा है!

नीना: (कात्या से) क्या सच में तुम्हारी बुर्योन्का ने शराब (सामोगोंकु) पी ली? (कात्या से, अलेक्सांद्रा के बारे में) वाह! यह तो नशे (अल्कोगोल्नोगो ओप्यानेनिया) की हालत में है! एक

सौ तीस पर सत्तर! मुझे, जवान और शांत अवस्था में, ऐसा ब्लड प्रेशर! (यंत्र हटाती है) आपके साथ, दादी (बाबुष्का), सब ठीक है! आप सौ साल तक जिएँगी!

अलेक्सांद्र: (ताना मारता है) उसे तो सौ साल पूरे हो गए होंगे!

नीना: तो दो सौ साल तक जिएगी!

अलेक्सांद्रा: (बिना ज्यादा उत्साह के) अरे, मर रही हूँ...

नीना: यहाँ आपके लिए नाइट्रोग्लिसरीन (नित्रोग्लित्सेरिन चिक) है, इसे अपनी जीभ के नीचे रखें और पकड़ें!

नास्त्या चुपचाप फ्लैट में आती है।

(नास्त्या को देखती है) क्या तुम्हें बुलाया गया था? (अलेक्सांद्रा से) संक्षेप में, आपके साथ सब ठीक है, दादी!

नास्त्या: (अलेक्सांद्रा से) नमस्ते, परदादी (प्राबाबुष्का)!

अलेक्सांद्रा: मैं तुम्हारी कैसी परदादी?

नास्त्या: (कंधे उचकाती है) अगर आप मेरी माँ की दादी हैं, तो मेरी परदादी हुईं।

नीना: नास्त्या, बीच में मत बोलो!

नास्त्या: तुमने खुद कहा – दादी!

नीना: यह मेरी दादी नहीं है!

नास्त्या: तो किसकी? कात्या आंटी की?

नीना: किसी की नहीं! बस एक दादी! किसी की नहीं!

अलेक्सांद्रा: (गोली थूकती है) छी, तुम्हारी गोली! बिल्कुल सही, किसी की नहीं! किसी काम की नहीं! उसे गाय पर बदल (प्रोमेनयाली) दिया!

नास्त्या शयनकक्ष में, गाय के पास चली जाती है।

कात्या: माँ, तुम्हारी तबियत ठीक है!

अलेक्सांद्रा: और तुम खुश हो कि मैं मर जाऊँ! तुम यहाँ अपनी गाय के साथ रह जाती!

कात्या: माँ, तुम नहीं मर रही हो।

अलेक्सांद्रा: मर रही हूँ! मेरा दम घुट रहा है! (नीना के बारे में) वह डॉक्टर नहीं है, वह नहीं समझती! मुझे ऑक्सीजन (किस्लोरोद) चाहिए!

नीना: आपको ऑक्सीजन कुशन (पोदुश्का) की ज़रूरत नहीं है!

अलेक्सांद्रा: चाहिए, चाहिए, मेरा दम घुट रहा है।

रुस्लान: कातेरिना एंड्रीवाना, मैं दवा की दुकान (अप्तेकु) जाता हूँ। मुझे इसका अनुभव है, मैं अपनी सभी पत्नियों के लिए दौड़ा था।

अलेक्सांद्रा: दूसरे बचा रहे हैं, पर अपनी (रोद्नोय) को कोई फर्क नहीं! वह मेहमानों को दवा की दुकान भेजता है, पर खुद बैठी है, हाथ पर हाथ धरे, गाय के पास, और इंतज़ार कर रही है कि माँ मर जाए!

कात्या: ठीक है, माँ, मैं दवा की दुकान जाती हूँ!

नीना: आधा मॉस्को दौड़ोगी, जब तक कुशन मिलेगा! (नाराज होकर चली जाती है)

कात्या: (कपड़े पहनती है) शांत हो जाओ, माँ, सब ठीक हो जाएगा! (रुस्लान और अलेक्सांद्र से) निगरानी रखना! अगर कुछ हो – तुरंत एम्बुलेंस बुलाना!

रुस्लान: चिंता न करें, कातेरिना एंड्रीवाना, व्यवस्था (पोर्यादोक) सुनिश्चित करूँगा, मुझे अनुभव है।

कात्या: धन्यवाद! मैं जल्दी हूँ।

अलेक्सांद्रा: (अलेक्सांद्र से) देखो, कात्या गई?

अलेक्सांद्र: (दरवाजे से बाहर देखता है) कोई नहीं है!

अलेक्सांद्रा अचानक फुर्ती से उठती है, रसोई में भागती है, मेज से एक बड़ा चाकू (नोज़) उठाती है, रुस्लान के पास दौड़ती है और चाकू उसके हाथों में थमा देती है।

अलेक्सांद्रा: काटो (रेज़्ह)!!!

रुस्लान और अलेक्सांद्र हक्के-बक्के रह गए।

अलेक्सांद्रा: काटो, जब तक कात्या वापस नहीं आई!!!

अलेक्सांद्र: देखो – पल भर में ठीक हो गई!

अलेक्सांद्रा: गाय काटो, कहा!

रुस्लान: यानी कैसे? मालकिन (खोज़्याइकी) के बिना?

अलेक्सांद्रा: इस मालकिन से मैं और भी बड़ी मालकिन हूँ! सीधा जवाब दो, – क्या तुम कात्या से शादी करने में रुचि रखते हो?

रुस्लान: कातेरिना एंड्रीवाना से पूछना चाहिए।

अलेक्सांद्रा: किस बारे में पूछना है?

रुस्लान: क्या वह सहमत हैं? वह एक सभ्य (कुल्तुर्नाया) महिला हैं। हो सकता है, वह मना कर दें!

अलेक्सांद्रा: मना करें! तुम्हें? अगर यह गाय न होती! हम साशा के साथ – बाज़ार जाते, और तुम यहाँ उसके साथ कब के कबूतर (गोलुब्की) बन गए होते! हाँ, अगर यह गाय न होती, तो आज शादी हो जाती, और कल रजिस्ट्रेशन करवा लेते! और वह पागल (प्सिखोवान्नाया) इसलिए है क्योंकि उसके पास आदमी नहीं है!

रुस्लान: पर मेरे इशारों (नाम्योक) पर प्रतिक्रिया नहीं दी!

अलेक्सांद्रा: किसी ने नज़र लगा दी (स्लाज़िली)! यह गाय यहाँ कुछ सोच-समझकर नहीं आई! किसी ने फेंक दी! क्या कभी सुना है, गाय माँ से ज्यादा प्यारी! क्या – माँ! गाय की वजह से आदमी को ठुकराने (ओत्काज़ात्स्या) को तैयार है!!!

रुस्लान: गाय आदमी को कैसे रोक सकती है?

अलेक्सांद्रा: काटो! (जल्दी से रसोई में भागती है, एक गिलास शराब (सामोगोंकी) डालती है और रुस्लान को देती है) पीओ! और काटो!

रुस्लान: अरे, ऐसे तो नहीं किया जाता!

अलेक्सांद्रा: तुम बस पीओ, पीओ!

रुस्लान: (एक घूंट में पी जाता है और भौंहें चढ़ाता है) तो इसके लिए तो कुछ रखना होगा, यहाँ खून (क्रोवी) होगा...

अलेक्सांद्रा: यह तो दूसरी बात है! यह तुम कमांडर हो! आदेश दो! अभी बर्तन (कस्त्र्युल्योक) लाती हूँ...

रुस्लान: बाल्टियाँ (व्योद्रा) चाहिए! ग्वाल-बैल (कोर्त्तो)!

अलेक्सांद्रा: कैसे ग्वाल-बैल? कात्या अभी-अभी लौटेगी! काटो!

रुस्लान: फ्लैट गंदा हो जाएगा (ज़ागादिम)!

अलेक्सांद्रा: धो लेगी, मरेगी नहीं!

रुस्लान: तो चलो बाथरूम में ही करते हैं!

अलेक्सांद्रा: सही है, बाथरूम में! (पति से) गाय को बाथरूम में ले चलो!

अलेक्सांद्र: मैं?

अलेक्सांद्रा: और कौन? मुझे उससे डर लगता है! (उसे शयनकक्ष की ओर धकेलती है)

अलेक्सांद्र: (मेहराब में झाँकता है) उफ़, कितनी बड़ी है! इधर आओ, बुर्योन्का! काम करते हैं! (अलेक्सांद्रा से) देखो, समझ गई! उठी और आ रही है!

नास्त्या की तीखी चीख: "बुर्योनुश्का-मातुष्का, मत जाओ! वे तुम्हें काटना चाहते हैं!"

अलेक्सांद्र: देखो, समझ गई! रुक गई और लड़की की ओर सिर घुमाया! कितना मज़ाकिया (यूमोर) है!

अलेक्सांद्रा: (मेहराब के पास कूदती है, नास्त्या से) जाओ!

नास्त्या की आवाज़: "मैं नहीं जाऊँगी, दुष्ट सौतेली माँ (ज़लाया माचेखा)!"

अलेक्सांद्र: गाय के पीछे छिप गई! फुर्तीली बच्ची (शुस्त्राया पात्सांका)!

रुस्लान: (अलेक्सांद्र को एक सेब (याब्लोको) देता है, और चाकू पीठ के पीछे छिपा लेता है) तुम उसे बहलाकर निकालो, इस सेब से बहलाओ!

अलेक्सांद्र: (गाय की ओर सेब बढ़ाता है) इधर आओ, अच्छी, इधर आओ, होशियार, मेरे पास आओ! (अलेक्सांद्रा से) सेब के लिए बढ़ी (पोत्यानुलास)!

रुस्लान: और तुम धीरे-धीरे पीछे हटो, हटो, उसे बहलाते रहो!

नास्त्या की आवाज़: "बुर्योनुश्का-मातुष्का, उन पर भरोसा मत करो! वे सब झूठ बोल रहे हैं! वे बुरे हैं!"

अलेक्सांद्र फुर्ती से पीछे हटता है।

अलेक्सांद्रा: (अलेक्सांद्र से) क्या उछल-कूद मचा रहे हो?

अलेक्सांद्र: करीब-करीब सींग मार ही दिया (बोद्नुला)!

अलेक्सांद्रा: डरपोक (त्रुस)!

अलेक्सांद्र: खुद बहलाकर निकालो! तुम तो बाथरूम में जाने को तैयार हो, पर वह तुमसे ज़्यादा समझदार है, शायद!

अलेक्सांद्रा: (रुस्लान से) तुम उसे प्यार से बुलाओ, उसे झुककर नमस्ते करो, पर वह नहीं आती! कमीनी (पास्कुदा), गाय नहीं! सीधे शयनकक्ष में काटो!

रुस्लान: अच्छा, कैसे...

अलेक्सांद्रा: काटो! बाद में देखेंगे! काटो!!! समय नहीं है, उसके साथ समय बर्बाद करने का!

रुस्लान: अच्छा, सारी ज़िम्मेदारी (ओत्वेत्स्त्वेनोस्त) आप पर है! मेरे लिए काटना मुश्किल नहीं है, पर ज़िम्मेदारी आप पर है, ध्यान रखें!

अलेक्सांद्रा: मुझ पर, मुझ पर! जल्दी काटो, देर मत करो!!!

रुस्लान: अच्छा, तो भगवान की मदद से! (चाकू मजबूती से पकड़ता है और मेहराब में प्रवेश करता है)

नास्त्या: (फ्लैट में इधर-उधर भागती है) माँ!!! कात्या आंटी!!! बुर्योनुश्का को काट रहे हैं! (शयनकक्ष में भागती है)

रुस्लान की आवाज़: काटती (कुसायेत्स्या) है!

अलेक्सांद्रा: काटती है? कोई बाघ (तिग्र), गाय नहीं!

रुस्लान की आवाज़: लड़की काट रही है! लड़की को बाहर फेंको, वरना चाकू के नीचे आ जाएगी! गलती से लग जाएगा!

अलेक्सांद्रा: यहाँ से बाहर निकलो, बदमाश लड़की (पास्कुद्राया देव्चोंका)!

रुस्लान की आवाज़: चाकू के नीचे मत आओ, कहता हूँ!

अलेक्सांद्रा: (दृढ़ता से शयनकक्ष की ओर बढ़ती है) मैं उसे अभी दिखाती हूँ...

कात्या: (ऑक्सीजन कुशन (किस्लोरोद्रोय पोदुश्कोय) लेकर लौटती है) यहाँ क्या हो रहा है? माँ?

अलेक्सांद्रा: आ गई! कात्या आ गई! उसे जल्दी काटो! काटो!

रुस्लान चाकू लिए शयनकक्ष से बाहर झाँकता है।

कात्या: (उस पर कुशन फेंकती है, बंदूक पकड़ती है और मेहराब की ओर भागती है) रुको! (बंदूक उठाती है) गोली मारूँगी!

रुस्लान वापस शयनकक्ष में घुस जाता है।

कात्या: बाहर आओ!

रुस्लान फिर से बाहर आता है।

कात्या: चाकू फेंक दो! गोली मारूँगी!

रुस्लान: (चाकू फेंकता है) फेंक दिया!

कात्या: गोली चला रही हूँ!

अलेक्सांद्रा: कात्का, तुम क्या कर रही हो? लोगों के सामने बदनाम कर रही हो! अभी बंदूक दे दो!

कात्या: पास मत आओ – बिना चेतावनी के गोली मारूँगी!

अलेक्सांद्रा: अपनी माँ पर, बिना चेतावनी?

कात्या: (बंदूक थोड़ा नीचे करती है) पैरों पर! दीवार के सहारे! सब दीवार के सहारे!

सब दीवार के सहारे सिमट जाते हैं।

अलेक्सांद्र: आप कहाँ निशाना लगा रही हैं, कातेरिना एंड्रीवाना! क्या यह पैरों पर लगता है? यह पैरों पर नहीं, यह इससे भी बुरा है! बैरल (स्तवोल) थोड़ा नीचे करें! (अलेक्सांद्रा से) मुझे बहलाया (स्मानिवाला)! बेटी के पास चले, बेटी के पास, वहाँ अच्छा है!

रुस्लान: जीवन भर सिखाता हूँ – औरतों पर भरोसा मत करो!

नास्त्या: (बाहर कूदती है और कात्या से चिपक जाती है) उन सबको पूरी ताकत से गोली मारो, कात्या आंटी, वे बुरे हैं!

कात्या: सब – यहाँ से बाहर निकलो!

अलेक्सांद्रा: (कात्या से, भव्यता से) अपनी जन्मदाता माँ को निकाल रही हो?! मैं श्राप (प्रोक्ल्यानु) दूँगी!!!

नीना: (अंदर आती है) और आप, देखता हूँ, दादी, बिना ऑक्सीजन के भी ठीक हो गईं!

रुस्लान: (नीना से, अचानक निराशा से, वह पूरी तरह शांत हो गया है) बेवकूफ (दुराक) हूँ मैं, कितना बेवकूफ!

नीना: मैं बहस नहीं करूँगी! आपको बेहतर पता होगा!

अलेक्सांद्र: (नीना से, चापलूसी से) और भाई तो इस कात्या से शादी करने वाला था!

नीना: जाहिर है, शादी टूट गई! स्वभाव (खराक्तेरामी) से मेल नहीं खाया!

कात्या: जाओ!

रुस्लान: चलो, भाई, हम दोनों तुम्हारे साथ बेवकूफ हैं! (कपड़े पहनते हैं)

अलेक्सांद्रा: अरे, मुझे बुरा लग रहा है, बुरा, मर रही हूँ!

अलेक्सांद्र: (कात्या से) इसको गोली मार दो, ताकि तकलीफ न हो!

कात्या: माँ, जाओ!

अलेक्सांद्रा ऑक्सीजन कुशन पकड़ती है और पाइप (श्लांगु) से चिपक जाती है।

नीना: दादी, कुशन अपने साथ ले जाओ!

शयनकक्ष से – मू-उउउ! (और इस "मू" में कुछ विजयी है)

अलेक्सांद्रा: (ऑक्सीजन से अचंभित, मस्ती में) मर रही हूँ... (चुलबुली होकर) अरे, मर रही हूँ! (पूरी तरह खुश होकर, नाचती हुई) मर रही हूँ-मर रही हूँ! (अचानक जोश के साथ ज़ोर से गाती है) वह एक शक्तिशाली झटके (मोश्चिम वज़्माखोम) के साथ सुंदर राजकुमारी (क्रासावित्सु-क्न्याज़्नु) को उठाता है और उसे एक आती हुई लहर (नाबेझ्नाव्शुयु वोल्नु) में फेंक देता है!

अलेक्सांद्र: (उसे दुपट्टा (प्लातोक) बाँधता है, कोट (पल्तो) पहनाता है) चलो, चलो... जहाज़ से (ज़ा बोर्त)! बदतमीज़ी (बेज़ोब्राज़िया) के लिए मुझे माफ़ करें, कातेरिना एंड्रीवाना!

सब चले जाते हैं। अलेक्सांद्रा ऑक्सीजन कुशन अपने साथ ले जाती है।

अलेक्सांद्रा: (दरवाजे पर) नमस्ते! और बैग, बैग! शराब (सामोगोनचिक), चरबी (साल्त्से) छोड़ दें, क्या? ताकि वह अपनी गाय के साथ यहाँ मौज (पिरोवाला) करे?

पुरुष बैग ले जाते हैं।

रुस्लान: मुझे माफ़ करें, कातेरिना एंड्रीवाना!

सब चले जाते हैं। अलेक्सांद्रा गाना शुरू करती है: "मुझे अद्भुत विस्तार दिखता है, मुझे खेत और मैदान दिखते हैं! यह रूसी विस्तार है, यह रूसी धरती है!"

शयनकक्ष से: "मू-उउउ..." (विजयी ढंग से)

कात्या, वह अभी भी सदमे (शोके) में है, बिना बंदूक छोड़े, शयनकक्ष में भागती है और वहाँ से सुनाई देता है: "मेरी सींग वाली (रोगातेंकाया), मेरी सफ़ेद (बेलेंकाया), उन्होंने तुम्हें कुछ नहीं किया?"

नास्त्या: (नीना से) बुर्योनुश्का कहती है: "लाल बालों वाली कन्या, मेरा मांस मत खाना, मेरी हड्डियाँ (कोस्तोच्की) इकट्ठा करना, एक रूमाल (प्लातोचेक) में बाँधना, बगीचे (सादु) में लगाना, और मुझे कभी मत भूलना, हर सुबह पानी (वोदोयु) से सींचना!"

नीना: और गाय की हड्डियों से एक सेब का पेड़ (याब्लोंका) उग आता! और उस पर ऊँचे-ऊँचे सेब (याब्लोचकी) लटकते! और सेब के पेड़ के पास से एक जवान (मोलोदेट्स) गुज़रता और सेब तक नहीं पहुँच पाता, और वह तुमसे कहता: "सुंदर कन्या (देवित्सा-क्रासावित्सा), मेरे लिए एक सेब तोड़ो, तो मुझसे शादी कर लेना..."

नास्त्या: (चीखते हुए) शादी नहीं करना! गाय (कोरोवुष्कु) चाहिए!

नीना: (नास्त्या के सामने बैठती है) मेरी खुशी (रादोस्त) तुम हो! मैं तुम्हें कैसे सांत्वना (उतेशित) दूँ? मेरे पास तुम्हें सांत्वना देने के लिए कुछ नहीं है! (उसे कसकर गले लगाती है और अपने सीने से लगा लेती है)

शयनकक्ष से कात्या की आवाज़: मेरी प्यारी, मेरी असहाय (बेज़ज़ाश्चित्नाया)!

नास्त्या: और बुर्योनुश्का को कोई और नाराज (ओबिदित) नहीं करेगा?

नीना: कोई नहीं, डरो मत, प्यारी!

नास्त्या: कभी नहीं?

नीना: कभी नहीं, प्यारी, कभी नहीं!

नास्त्या: सच-सच?

नीना: सच-सच!

नास्त्या: माँ, मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ!

नीना: और मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ!

सुनाई देता है कि कात्या विलाप (य्र्दाएत) कर रही है: "हे भगवान! हे भगवान! ये कैसे लोग हैं?!"

नीना और नास्त्या शयनकक्ष में भागती हैं।

नीना कात्या (जिसके पास अभी भी बंदूक है) को बाहर ले जाती है, सोफे पर बिठाती है।

नीना: अच्छा, बस करो, कात्युशा, बस करो, अपनी बुर्योन्का को मत डराओ!

कात्या सोफे पर औंधे मुँह गिरती है और विलाप (य्र्दाएत) करती है।

नीना: अच्छा, बस करो, रो लो, अपने अंदर मत रखो!

कात्या: ये कैसे लोग हैं?! अगर तुम न आती तो मैं सच में इन सबको मार सकती थी... हे भगवान, हे भगवान...

नीना: तुम किसी को नहीं मारती! बकवास मत करो!

कात्या: मार देती, कसम खाता हूँ, मार देती... हे भगवान, हे भगवान... अगर तुम न होती, तो मैं गोली चलाना शुरू कर देती...

नीना: तो क्या? बंदूक में तो कारतूस (ज़ार्याझ़ेनो) नहीं है!

कात्या अचानक चुप हो जाती है, नीना को देखती है।

दीवार के पार चेलो (वायलनसेलो) बजने लगता है। सामंजस्य (गार्मोनी) और आनंद (ब्लागोस्ती) से भरी एक धुन, आकाश (नेबेसाम) की ओर बढ़ी।

नास्त्या: (मेहराब में) बुर्योनुश्का ने गोबर (पोकाकाला) किया!

ठहराव। चेलो। संगीत। शांति (पोकोय)।

नास्त्या: कात्या आंटी, क्या मैं खुद उसके गोबर के ढेर (लेपेशेच्की) हटा सकती हूँ? क्या मैं कर सकती हूँ, कात्या आंटी? मैं अच्छे से हटा दूँगी! अच्छा, कात्या आंटी, उनसे बहुत अच्छी महक (पाख़्नुत) आ रही है!

कात्या अचानक हँसने लगती है। नीना उसे देखती है और जोर से हँसने लगती है। नास्त्या ताली बजाती है और हँसी से लोट-पोट हो जाती है। और अब तीनों महिलाएँ जोरदार हँसी (खोखोत) से लोट-पोट हो रही हैं, एक-दूसरे को देखती हैं, और एक पल की रुकावट (पेरेदिश्का) के बाद, फिर से हँसने लगती हैं।

नीना: अरे, नहीं हो सकता – और उसे जहाज़ से फेंक देता है... (ज़ा बोर्त येये ब्रोसायेत) अरे, जैसे याद आता है!

वादिम प्रवेश करता है, लेकिन किसी को उस पर ध्यान नहीं जाता। केवल धुन (मेलोदिया) बंद हो जाती है।

वादिम: (महिलाओं को देखता है, शांत होने का इंतज़ार करता है) मेरे बिना बहुत मज़ा कर रही हो!

नीना: अरे, कात्या, आज तो तुम्हारा खुला दरवाज़ा (ओत्क्र्य्तीख द्वेरेय) का दिन है!

कात्या: (उठती है, वादिम के पास जाती है, बंदूक बढ़ाती है) यह लो तुम्हारी बंदूक!

वादिम: (बंदूक लेता है, हैरान) समझा नहीं?

कात्या: तुम बंदूक भूल गए थे। बंदूक लेने आए हो?

वादिम: नहीं, बस वापस आया हूँ।

कात्या: माफ करना, तुम बेवक्त आए। मुझे जल्दी से चिड़ियाघर (ज़ोपार्क) या घुड़दौड़ के मैदान (इपोद्रोम) जाना है!

वादिम: क्या चिड़ियाघर को टाला नहीं जा सकता? तुम तो वहाँ पहले भी जा चुकी हो। बचपन में!

कात्या: मैं वहाँ घास (से-नो) के लिए जा रही हूँ।

वादिम: कात्या, हमें बात करनी है!

कात्या: कल, आज बिल्कुल नहीं हो सकता। घास खत्म हो गई है!

नीना: नास्त्या, हाथ दो, चलो! हमें जल्दी है। मैं नास्त्या को सेनेटोरियम (सानातोरिय) भेज रही हूँ! स्वागत है, वादिम! (चली जाती हैं)

कात्या: अच्छा, क्या? जल्दी बोलो, कृपया! मुझे जल्दी है!

वादिम: उसने मुझे छोड़ दिया, कात्या!

कात्या: (बैठ जाती है) शायद, सब कुछ इतना बुरा नहीं है? शायद, बस झगड़ा (पोस्सोरिलिस) हो गया? ऐसा होता है – झगड़ा होता है, फिर सुलह (पोमिरितेस) हो जाती है! देखना, सब ठीक हो जाएगा!

वादिम: उसने कहा कि बच्चा मेरा नहीं है! मुझे समझ नहीं आता, उसने कब झूठ (लगाला) बोला? मेरा बच्चा है या नहीं? और तुम क्या सोचती हो, कात्या?

कात्या: मैं? मैं सोचती हूँ... मुझे नहीं पता।

वादिम: कात्या, वह मुझे हर समय धोखा देती है (इज़मेन्याएत)! (कात्या के पास बैठता है और अपना चेहरा उसके कंधे पर टिका देता है, आँसुओं के साथ) वह मुझे सीधे मुँह धोखा देती है!

कात्या: बेचारा, बेचारा वादिक!

वादिम: (आँसुओं के साथ) मैंने उसे पकड़ा, जैसे किसी गंदे चुटकुले (पोश्लोम अनेक्दोते) में, और उसने इनकार (ओत्रित्सात) भी नहीं किया! सोच सकती हो?

कात्या: कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा (पेरेबोलित)।

वादिम: तुम्हें पता नहीं कितना अपमान (उनिज़्हेनिए), मुझे कितना दर्द होता है, मैं कितना आहत (ओस्कोब्ल्योन) हूँ, मेरा मज़ाक उड़ाया गया है, मैं तो उस पर विश्वास (वेरिल) करता था... तुम यह सब नहीं समझ सकती, कात्या, नहीं समझ सकती!

कात्या: क्यों नहीं? मैं तुम्हें समझती हूँ, मैं सब समझती हूँ जो तुम अभी महसूस (चुव्स्त्वुएश) कर रहे हो।

वादिम: तुम कहाँ से समझ सकती हो?

कात्या: मैं क्यों नहीं समझ सकती? मैं समझती हूँ! जब तुम विश्वास करते हो और तुम्हें धोखा (इज़मेन्यायुत) दिया जाता है, तो बहुत दर्द (बोल्नो) होता है।

वादिम: मैंने तुम्हें कभी धोखा नहीं दिया!

कात्या: मुझे पता है। उसे माफ (प्रोस्तित) करने और फिर से शुरू करने की कोशिश करो।

वादिम: मैंने कोशिश कर ली।

कात्या: और क्या?

वादिम: वह सहमत नहीं है। क्या तुम फिर से कोशिश करने की सलाह देती हो?

कात्या: कोशिश करो!

वादिम: मैं थक गया हूँ, कातेंका, मैं बहुत थक गया हूँ... अपमानित, आहत, मज़ाक उड़ाया गया... केवल एक चीज़ मुझे सहारा (पोद्देर्ज़्झिवायेत) देती है। विश्वास कि तुम मुझे हमेशा वापस (ओब्रात्नो) स्वीकार (प्रिम्योश) करोगी। तुम्हें मेरे बिना बहुत बुरा (प्लोखो) लग रहा है?

कात्या: नहीं-नहीं, मेरी चिंता मत करो! मुझे अच्छा (खोरोशो) लग रहा है! मुझे सच में अच्छा लग रहा है! मुझे आखिरकार समझ आ गया कि जब कोई तुमसे प्यार (ल्युबियात) करता है तो क्या मतलब होता है।

वादिम: क्या तुम्हें कोई मिल गया? (तीखेपन से) तुमने मुझे जल्दी ही भूला दिया!

शयनकक्ष से – मू-उउउ...

वादिम: गाय अभी भी यहाँ है?

कात्या: हमेशा के लिए!

वादिम: कात्या, लेकिन यह अजीब है...

कात्या: और क्या हर किसी को यह चुनने (व्ब्रिरात) का अधिकार (प्रावो) नहीं है कि वह किससे प्यार करे?

दरवाजे की घंटी बजती है। कात्या दरवाजा खोलती है। दहलीज पर रुस्लान है।

रुस्लान: मुझे पता है, आप मुझे देखकर खुश (रादी) नहीं हैं। मैंने गलती की कि मैं आपके पास आने की इच्छा (पोर्व्वु) के आगे झुक गया!

कात्या: अंदर आइए!

रुस्लान: (वादिम को देखता है) मुझे समझ आया, गलत समय पर आया। मैं जाता हूँ!

कात्या: (रुस्लान से) मुझे आपका परिचय (पोज़्नाकोमित) कराने दीजिए! यह हैं वादिम। मेरे पूर्व (ब्व्रिशय) पति। (वादिम से) यह हैं रुस्लान रिफ़ातोविच।

वादिम: (शत्रुतापूर्ण (व्राज़्देब्नो) स्वर में) जाहिर है, भावी (बुदुश्चिय) पति?

शयनकक्ष से – मू-उउउ।

रुस्लान: (गाय की ओर सिर हिलाता है) मैं बस पूछने आया था, आपकी बुर्योन्का कैसी है, क्या वह ठीक है?

कात्या: हाँ।

रुस्लान: मुझे खुद नहीं पता कि क्या हुआ! कोई ग्रहण (ज़ात्मेनिए) सा था! मैं बस यह कहने आया था कि मुझे पता है कि मैं कितना दोषी (विनोवात) हूँ। मैं माफ़ी (प्रोश्चेनिया) नहीं माँगता! माफ करना असंभव (नेवोज़्मोज़्नो) है। बस चाहता था कि आप मुझे सुनें (उस्ल्यशाली)। मुख्य बात – आपने मुझे सुना, अच्छा, और बस... (जाने के लिए मुड़ता है)

वादिम: मिलकर खुशी हुई! उम्मीद है, हम दोबारा नहीं मिलेंगे!

कात्या: रुको, रुस्लान रिफ़ातोविच! मैंने बदसलूकी (नेक्रासिवो) की!

रुस्लान: नहीं, नहीं, आप – सही, आप – सब सही...

कात्या: मुझे खेद है कि ऐसा हुआ... मैं चाहूँगी कि सब कुछ सुधार (इस्प्रावित) लूँ, लेकिन...

रुस्लान: ज़रूरत नहीं। मैं आपके उदार शब्दों (ब्लागोरोद्न्य्ह स्लोव) के लायक (नेदोस्तोइन) नहीं हूँ। मैं जाता हूँ, मैं बेवक्त (नेव्पोपाद) हूँ। देख रहा हूँ, आपके पति... वापस आने की गुहार (प्रोसित्स्या) लगा रहे हैं।

कात्या: (हँसी) अरे, नहीं! वादिम तो बस ऐसे ही आया था...

रुस्लान: (अचानक उसके सामने घुटनों (कोलेनी) पर बैठ जाता है) मैं विनती करता हूँ...

कात्या: रुस्लान रिफ़ातोविच, हे भगवान, क्यों? उठिए!

रुस्लान: मुझे मत रोको, मैं आपसे डरता हूँ...

कात्या: हे भगवान, यह क्या हो रहा है?

रुस्लान: आप... आप, एक सितारे (ज़्वेज़्दा) की तरह... दूर (दाल्योकाया) के...

वादिम: अरे, वह तो कवि (पोएत) निकला!

रुस्लान: आप मेरा मज़ाक (स्म्योयोतेस) उड़ा रहे हैं, कातेरिना एंड्रीवाना? नहीं, आप मज़ाक नहीं उड़ा सकतीं, आप अलग (द्रुगाया) हैं!

कात्या: मैं मज़ाक नहीं उड़ा रही। लेकिन घुटनों पर क्यों? यह – बहुत है (लिश्नेए)! उठिए, मैं आपसे विनती करती हूँ!

रुस्लान: मेरी पत्नी (सुप्रुगोय) बनिए!

कात्या: हम तो मुश्किल से एक-दूसरे को जानते हैं!

रुस्लान: दिल (सर्द्त्से)... यह – पहली बार जीवन में दिल धड़क (ब्योत्स्या) रहा है... आप पहली... आप – पहली जब दिल धड़कता है... और आपकी बुर्योन्का को मैं उँगली (पाल्त्सेम) से नहीं छूऊँगा! मैं... आपके नाम पर मांस (म्यासो) खाना भी छोड़ दूँगा!

वादिम: देखता हूँ, तुमने मेरे बिना समय बर्बाद (तेर्याला) नहीं किया!

रुस्लान: (जल्दी करता है) मैं आपको गोद (रुकाह) में उठाकर रखूँगा... मैं आपको गाय (कोरोवोय) के साथ लेता हूँ! बेशक, मैं आपके लायक नहीं हूँ...

कात्या: लायक नहीं? ऐसे शब्द क्यों? हम बाद में बात करेंगे...

वादिम: कात्या, क्या बात करनी है? क्या सच में तुम सोच भी सकती हो कि संभव है – तुम और वह?

कात्या: सोच सकती हूँ।

वादिम: यानी कैसे? और मैं? मेरा क्या होगा?

रुस्लान: (वादिम से) क्या वह तुम्हारी आया (न्यान्का) है? तो आया को भी शादी करने का हक है!

वादिम: कात्या! तुम तो मुझसे प्यार करती थी! तुम मुझसे आधी सदी (पोल्वेका) प्यार करती थी! ऐसा प्यार कोई नहीं करता जैसे तुम! ऐसे प्यार के बारे में तो किताबें लिखी जाती हैं!

रुस्लान: वह – हाँ! उसने प्यार किया! पर तुम तो मछली (रय्ब्कु) खाना और... (नाव पर) बैठना चाहते थे (न)! मुझे माफ़ करें, कातेरिना एंड्रीवाना! (वादिम से) क्या तुम प्यार समझ सकते हो? अगर... अगर मुझे... अगर कातेरिना एंड्रीवाना! मैं तो... मैं राष्ट्रपति (प्रेज़िदेंतोम) बन जाता, मैं देश (स्त्रानी) से एक फूलों का बाग (त्स्वेतुश्चिय साद) बना देता... मेरे तो पंख

(क्रिल्या) होते... मैं अंतरिक्ष (कोसमोस) में, बिना रॉकेट (राकेटी) के, सिर्फ पंखों पर! मैं तो... कातेरिना एंड्रीवाना! कातेरिना एंड्रीवाना!

वादिम: मैंने क्या किया! मुझ पर कैसा ग्रहण (ज़ात्मेनिए) चढ़ गया था! (कात्या के सामने घुटनों पर बैठ जाता है) कात्या, मुझे मत छोड़ो!

कात्या: तुम सबको क्या हो गया?! उठो! अच्छा, कम से कम एक तो, घुटनों से उठो!

रुस्लान: मैं कभी नहीं उठूँगा! आप मुझे सुन लें, कातेरिना एंड्रीवाना!

वादिम: और मैं भी कभी नहीं उठूँगा! कात्या, मुझे माफ कर दो! फिर कभी नहीं, सुनती हो, कभी नहीं... मुझे याद आया, कात्या, मुझे याद आया! मुझे याद आया!!!

कात्या: क्या याद आया?

वादिम: तुमने मेरे जूते (बोतिनोचेक) के फीते (ज़ाश्नुरोव्वाला) कैसे बाँधे थे... तुमसे फूलों (त्स्वेतामी) की खुशबू (पाख़्लो) आ रही थी, और मेरे जूते (बोतिनोचकी) नीले (सिनीये) थे!

कात्या: हाँ... नीले...

नीना और नास्त्या अंदर आती हैं। नीना के हाथ में एक बड़ा बैग है।

नीना: कितने पुरुष, और सब घुटनों पर! फैसला (रेशेनो) हो गया! मैं तुरंत गाय पालूँगी! देखो, नास्त्या, देखो और याद रखो! एक महिला अभी भी पुरुषों को घुटनों पर ला सकती है!

रुस्लान: (उठता है, वादिम से) उठो! चलो, कहीं बैठते हैं! और कातेरिना एंड्रीवाना फैसला करें!

वादिम: कात्या?

कात्या: जाओ, वादिम!

रुस्लान: (वादिम से) चलो, हमें निकाला (गोन्यात) जा रहा है!

वादिम उठता है, पुरुष चले जाते हैं।

नास्त्या: आप उनके साथ क्या खेल रही थीं, कात्या आंटी?

कात्या: नास्तेंका, मुझे दुर्भाग्य से, इस खेल के नियम (प्राविला) नहीं पता।

नास्त्या: बिना नियमों (प्राविल) के सहमत (सोग्लाशायतेस) मत होना! हार जाओगी (प्रोइग्राएते)!

कात्या: डर है कि तुम सही हो।

नास्त्या: और मैं बुर्योनुश्का से विदा (प्रोश्चात्स्या) लेने जा रही हूँ! (शयनकक्ष की ओर भागती है)

कात्या: क्यों?

नीना: क्या – क्यों?

कात्या: वे हमारे सामने घुटनों पर क्यों बैठते हैं, केवल तब जब हमें इसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं होती?

नीना: कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं तुमसे बहुत बड़ी हूँ। मैंने द लिटिल प्रिंस (मालेंकोम प्रिन्त्से) और रॉबिन्सन (रोबिन्ज़ोना) की किताबें पढ़ी हैं। और द लिटिल प्रिंस के, और फ्राइडे (प्यात्निसी) के, और तुम्हारी बुर्योन्का के, एक ही नाम है – अकेलापन (ओदिनोचेस्त्वो)। इतना बड़ा-बड़ा सफ़ेद अकेलापन, जिसमें समझदार (पोनिमायुश्चिमी) प्यारी (लास्कोव्ही) नीली (गोलुबीये) आँखें हैं।

शयनकक्ष से नास्त्या की आवाज़: बुर्योनुश्का, प्यारी, अलविदा (प्रोश्चाय)! मुझे तुम्हारी याद (स्कुचात) आएगी, मैं तुम्हारे बिना रोऊँगी! बुर्योनुश्का, अच्छी, अलविदा!

और दीवार के पार चेलो (वायलनसेलो) रो (ज़ार्य्दाला) उठी!

उपसंहार (एपिलोग)

ऐसा प्रतीत होता है कि स्थान (प्रोस्त्रान्स्त्वो) मानो विस्तारित (राज़्द्विनुलोस) हो गया है।

अपार्टमेंट वही लगता है, पर शयनकक्ष का मेहराब कहीं दूर (पेर्स्पेक्टिवु) चला गया है। रसोई भी मानो पीछे हट (ओतोद्विनुलास) गई है। और बैठक कक्ष बहुत विशाल (ओग्रोम्नोय) हो गया है। उसमें फर्नीचर मानो छोटा (उमेन्शिलास) हो गया है, और एक वस्तु से दूसरी वस्तु के बीच बहुत अधिक दूरी पर रखा गया है। इस स्थान के बीच में एक असली सफ़ेद (बेलाया) गाय खड़ी है। उस पर – एक चादर (पोपोना) है, जो उसी कात्या के लबादे (खालाता) से बनी है, जिसमें हमने पहली बार कात्या को देखा था।

कात्या काले (च्योर्नोम) कपड़ों में – गाय के सामने, अपनी हथेली (लादोनी) पर चीनी (साख़र) बढ़ाए हुए है।

एक तरफ – वादिम और नीना हैं।

वादिम: गाय को चीनी नुकसान (व्रेद्नो) करती है।

खालीपन (पुस्तोते) में प्रतिध्वनि (एखो) उसके शब्दों को अस्पष्ट (नेव्न्याल्नो) दोहराती है।

नीना: कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, खाने दो। (और प्रतिध्वनि भी)

गाय चीनी नहीं लेती, वह कात्या की ओर बढ़ी और उसके चेहरे को चाटा (लिज़्नुला)।

वादिम: कात्या, सावधान (ओस्तोरोज़्ह्नेए)! (प्रतिध्वनि)

नीना: वादिम! (प्रतिध्वनि)

प्रवेश द्वार में प्रवेश करते हैं और सीढ़ियाँ चढ़ते हैं – मध्यम आयु (स्रेद्निह लेत) का एक पुरुष, काफी साधारण, भद्दे (ज़ात्योर्टोगो प्रोस्तोवातोगो) दिखने वाला, और एक महिला, भी मध्यम आयु की, मोटी (पोल्नाया), चेहरे पर शांत भाव (स्पोकोय्न्य्ह व्याज़्हेनियेम) के साथ। उन्होंने सफ़ेद, कुछ गंदे (ग्याज़्नोवात्य्हे) कोट (ख़लाती) पहने हुए हैं, लेकिन उनकी शैली (स्तिल्यु) से स्पष्ट है कि ये चिकित्सा कर्मचारी (मेदित्सिन्स्की राबोत्निकी) नहीं हैं। ऐसे कोट किसी दुकान (मागाज़िने) की बैक-ऑफिस (पोद्सोब्काह) में काम करने वाले या बच्चों के संस्थानों (देत्स्किह उच्रेज़्देनियाह) में तकनीकी स्टाफ (टेख्निचेस्की पेर्सोनाल) पहनते हैं। वे कात्या के दरवाजे के पास आते हैं, और महिला घंटी बजाती है।

वादिम: और ये शायद वही हैं! (प्रतिध्वनि)

कात्या: (चिंतित होकर) क्या वे उसके (गाय) लिए आए हैं? (कात्या की पंक्तियों के साथ प्रतिध्वनि नहीं है)

वादिम दरवाजा खोलता है।

महिला: गाय (कोरोवोय) के लिए आए हैं! क्या यहाँ है? (प्रतिध्वनि)

वादिम: यहाँ, यहाँ, हम तुम्हारा इंतज़ार कर रहे थे! (प्रतिध्वनि)

महिला और पुरुष अंदर आते हैं और बुर्योन्का को देखते हैं।

महिला: कितनी खूबसूरत (क्रासोता) है! (प्रतिध्वनि)

कात्या: (उनकी ओर मुड़ती है, चिंतित होकर) रुको, रुको, और नास्त्या? नास्त्या क्या करेगी?! वह रोएगी! नास्त्या, वह तो... वह... एक बछड़े (टेलेनोचेक) की तरह...

नीना: (कात्या को गले लगाती है) शांत हो जाओ, मैं तुम्हारे साथ हूँ। (प्रतिध्वनि)

कात्या: क्या वे मेरी बुर्योन्का को नाराज (ओबिडयात) नहीं करेंगे?

पुरुष: नहीं करेंगे! (प्रतिध्वनि के साथ) तो क्या, ले चलें (पोवेली)? इसे कैसे ले जाएँ? कहीं सींग (बोद्न्योत) न मार दे? शायद, सींगों को रस्सी (वेर्योव्कोय) से बाँध दें? (अपनी जेब से रस्सी निकालता है)

नीना: (प्रतिध्वनि के साथ) यह शांत (स्मिर्नाया) है। (कात्या से) चीनी दो! (चीनी लेती है, गाय के सामने खड़ी होती है) मेरे पीछे आओ, मेरी अच्छी, मेरी होशियार!

गाय फिर से कात्या की ओर बढ़ती है और फिर से उसके चेहरे को चाटती है।

कात्या: मुझे यकीन नहीं है कि ऐसा करना चाहिए...

वादिम: (कात्या के पास आता है और उसका हाथ पकड़ता है) कात्या, हम तो तुम्हारे साथ इस विषय (तेमु) पर पहले ही बहुत बात कर चुके हैं! (महिला और पुरुष से) इसे ले जाओ! (प्रतिध्वनि)

पुरुष: (अचानक गाय को रस्सी से मारता (ख्ल्येस्ट्नुल) है) अरे, चल! (प्रतिध्वनि)

कात्या: (बुर्योन्का की ओर झपटती है, उसे गले लगाती है, पुरुष से) तुम पागल हो गए हो?!

पुरुष: (समझ न आने पर, दोषी भाव से) तो अगर वह नहीं जाती तो उसके साथ क्या करते? (प्रतिध्वनि)

कात्या: (व्याकुल (तोस्कोय) होकर) लेकिन कैसे? मैं तो इन लोगों को नहीं जानती, मैं तो इन्हें नहीं जानती!

नीना: लेकिन वहाँ तो नास्त्या है, नास्त्या! (प्रतिध्वनि)

वादिम: (कात्या को गले लगाता है और उसे गाय से अलग करता है) बस, कात्या! (प्रतिध्वनि)

नीना: अब क्या किया जा सकता है? (प्रतिध्वनि)

महिला: (गाय को रस्सी से खींचती है, प्यार से कहती हुई) चलो, प्यारी, चलो! वहाँ बच्चे तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं, वहाँ तुम्हारी नास्त्या है। कहते हैं, तुम्हारा दूध (मोलोच्को) औषधीय (त्सेलेब्नोय) है, और हमारे बच्चों को, पता है कितना ताज़ा (स्वेज़्हे) दूध चाहिए! (प्रतिध्वनि)

गाय विरोध (उपिरायेत्स्या) करती है, लेकिन चलती है।

कात्या: (तेज़ व्याकुलता (तोस्कोय) के साथ) शायद, ज़रूरत नहीं है?

वादिम: कात्या, कात्या! (प्रतिध्वनि)

कात्या: (बुर्योन्का की ओर झपटती है, उसके सामने खड़ी हो जाती है) रुको!

वादिम: (जोर देकर शांत (पोद्च्योर्क्नुतो स्पोकोय्नो) स्वर में कात्या से) कुछ भूल गई? (प्रतिध्वनि)

कात्या: हाँ, भूल गई... भूल गई... भूल गई...

वादिम: क्या भूल गई? (प्रतिध्वनि)

कात्या: (महिला से) आप तो जानती हैं, इसे कैसे खिलाना (कोर्मित) है?

महिला: सेनेटोरियम (सानातोरिय) गाँव (देरेव्नी) के बीच में है! स्थानीय (मेस्त्न्ह) लोगों से पूछूँगी। (प्रतिध्वनि)

कात्या: क्या आपके पास मिश्रित चारा (कोम्बिकोर्म) है?

महिला: नहीं। (प्रतिध्वनि)

कात्या: (बहुत परेशान (नर्वनिचाएत) है, लेकिन विस्तार से बोलने की कोशिश करती है) तो अभी के लिए पिसा हुआ गेहूँ (द्रोब्ल्योनोए प्शेनिच्नोए ज़ेर्नो) दे सकते हैं। एक बाल्टी (वेद्रो) में – एक तिहाई, उबलते पानी (किप्यातकोम) से भरें और भाप (पारित्स्या) में छोड़ दें। एक दिन में – दो बाल्टी। और क्या घास (से-नो) है?

महिला: नहीं। आप इतनी चिंता (बेस्पोकोयतेस) मत करें। (प्रतिध्वनि)

कात्या: (निराशा (ओत्वायान्येम) के साथ) घास के बिना यह एक महीने में मर जाएगी!

वादिम: यह सब मामूली (पुस्त्याकी) बातें हैं, कात्या! वे घास के बारे में सोच लेंगे। (प्रतिध्वनि)

कात्या: रुको, कुछ महत्वपूर्ण (वाज़्नोए) बात...

महिला: आप परेशान (नर्वनिचाइते) न हों, भूखी (गोलोदात) नहीं रहेगी! अगर कुछ हो, तो रोटी (ख्लेबुश्का) हमेशा मिल जाती है! (प्रतिध्वनि)

कात्या: बहुत ज़्यादा रोटी नहीं देनी चाहिए! मुलायम (म्याग्की) रोटी तो बिल्कुल नहीं देनी चाहिए! उसे नमक (सोल्यु) के साथ रोटी की परत (गोर्बुश्की) पसंद है! लेकिन ताज़ी (स्वेज़्ही) रोटी नहीं देनी चाहिए! उसे फाइबर (क्लेत्वात्का) चाहिए।

महिला: अच्छा, अच्छा... हम फाइबर (क्लेत्वात्कु) ढूँढ़ लेंगे! सब ढूँढ़ लेंगे, चिंता मत करें! (प्रतिध्वनि)

कात्या: आलू (कार्तोश्का), गाजर (मोरकोव्का), पत्तागोभी (कापुस्ता)...

वादिम: बस, कात्या? (प्रतिध्वनि)

कात्या: मैं कुछ महत्वपूर्ण भूल रही हूँ... फिसल (उस्कोल्ज़्ज़ाएत) रहा है... भूल गई...

वादिम: तुम्हें ऐसा लगता है, कात्या, कि महत्वपूर्ण है... यहाँ इतना महत्वपूर्ण क्या हो सकता है? (प्रतिध्वनि)

कात्या: (घबराहट (पानिके) में) याद आया... उसे सेब (याब्लोकी) बहुत पसंद हैं!

पुरुष: कैसे सेब (याब्लोकी)? बच्चों (देतियाम) को भी कम पड़ते हैं! (प्रतिध्वनि)

महिला: सेब – पतझड़ (ओसेन्यु) में! पतझड़ में! (प्रतिध्वनि)

नीना रसोई की ओर भागती है और सेब का एक पूरा थैला (पाकेत) लाती है, महिला को देती है।

नीना: ये रहे – सेब! (प्रतिध्वनि)

वादिम: हम समाप्त (ज़ाक्रुग्ल्यायेम्स्या) करते हैं, कात्युशा! (हँसी के साथ) बस – और आँखें नम (ना मोक्रोम मेस्ते) हो गईं! लंबी विदाई (दोल्गिये प्रोवोदी) – बेकार आँसू (लिश्निए स्ल्योज़ी)! (प्रतिध्वनि)

कात्या: (तीखेपन से) रुको तुम! (महिला से, गिड़गिड़ाते हुए) मैं आपको नहीं जानती, लेकिन आपका चेहरा इतना दयालु (दोब्रोए) है! मेरी बुर्योन्का का ख्याल रखना, कृपया, ख्याल रखना! (आँसू रोकती है) अब वह पहले मिलने वाले व्यक्ति की दयालुता (दोब्रोते) पर निर्भर (ज़ाविसित) है!

वादिम: कातेंका, मैं तुमसे अनुरोध (प्रोशु) करता हूँ... (प्रतिध्वनि)

नीना: (आँसुओं के साथ, पुरुष और महिला को हाथ हिलाती है) ले जाओ इसे, ले जाओ! (प्रतिध्वनि)

महिला गाय को रस्सी से खींचती है, और वह भाग्य (ओब्रेच्योन्नो) से उसके पीछे चलती है। बस बार-बार कात्या को देखती है। और कात्या उसे जाते हुए देखती है। थैला (पाकेत)

फटता है, सेब बिखर जाते हैं। महिला हैरान होकर रुक जाती है। बुर्योन्का सेबों की ओर बढ़ती है। पुरुष सेब इकट्ठा (सोब्रात) करने के लिए झपटता है।

वादिम: इन सेबों को छोड़ो! जाओ, जल्दी ले जाओ! (प्रतिध्वनि)

और सब कुछ अंधकार (त्योमू) में डूब जाता है, केवल कात्या, वादिम और नास्त्या के चेहरे दिखाई देते हैं।

कात्या: उसका क्या होगा? मैं क्या कर रही हूँ? हे भगवान, मैंने क्या कर डाला? उसे मुझे वापस लौटा दो, उसे वापस लौटा दो!

वादिम: कात्या, तुम्हारी नसें (नेर्वी) खराब (रासस्त्रोयेनी) हैं! तुम्हें इलाज (पोद्लेचित्स्या) कराना चाहिए! यहाँ गाय कैसी हो सकती है? हम तुम्हारे साथ सामान्य (नोर्माल्नीये) लोग हैं! मैं एक प्रतिष्ठित (सोलिद्रोम) बैंक में काम करता हूँ! मैं यह नहीं होने दूँगा कि मुझसे खाद (नावोज़ोम) की बदबू आए!

कात्या: मुझे जाने दो! मैं पकड़ लूँगी! उसे कहाँ ले गए? मैं पकड़ लूँगी! मैं वापस लाऊँगी!

वादिम: कातेंका, सब बीत जाएगा! हम तुम्हारे साथ ठीक होंगे! मैं वापस आ गया हूँ! मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा! मुझे समझ आ गया, मुझे सब समझ आ गया, तुम मुझसे कैसे प्यार करती हो!

कात्या: (बिना भाव (बेज़ व्याज़्हेनिया) के, वादिम से) मुझे अकेला छोड़ दो, मैं अकेली रहना चाहती हूँ... मैं थोड़ी देर अकेली रहूँगी... (शयनकक्ष में चली जाती है)

रोशनी। वादिम और नीना रसोई में बैठे हैं। दीवार के पार – चेलो। लेकिन अब यह बेतुका (काकोफोनिया) है, वाद्य यंत्र (इंस्ट्रुमेंट) स्पष्ट रूप से आकस्मिक (स्लुचाय्न्य्ह), असंवेदनशील (ने चुव्स्त्वितेल्न्य्ह) हाथों में है। वादिम एक सेब खा रहा है।

नीना: अरे, ये वाद्य यंत्र (इंस्ट्रुमेंट) बर्बाद (ज़ागुब्यात) कर देंगे!

वादिम: समझा नहीं। क्या बर्बाद करेंगे?

नीना: अरे, पड़ोसी का लड़का (पारेन) अपना संगीत (म्यूज़्कु) बिना निगरानी (प्रिस्मोत्रा) के छोड़ देता है। और उसकी छोटी बहन (सेस्त्र्योंका) खुद अपनी मनमानी करती है, खुद नहीं जानती क्या! वह यंत्र तोड़ (पोलोमाएत) देगी! सारी सुंदरता (क्रासोतु) बर्बाद कर देगी!

वादिम: (झुंझलाहट (दोसादोय) के साथ) यहाँ तो बदबू (ज़ापाख़) है! सब कुछ इस गाय से बदबूदार (प्रोवोन्यालो) हो गया है! ऐसे बैठा हूँ जैसे अस्तबल (ख्लेवु) में! अब हवा (प्रोवेत्रिवत) करनी होगी और करनी होगी! (नीना से) सेब चाहोगी?

नीना: (बिना भाव (बेज़ व्याज़्हेनिया) के) नहीं।

वादिम: स्वादिष्ट (व्कुस्नोए)! (काटता है) मैं अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाऊँगा, कभी नहीं। मैं कात्या से कैसे जा सकता था? मुझे उम्मीद नहीं थी कि इससे वह इतनी टूट (स्लोमाएत) जाएगी। मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह इतना नीचे (ओपुस्तित्स्या) आ जाएगी!

नीना: बेवकूफी (ग्लुपोस्त) है, बेशक, लेकिन बुर्योन्का के बिना फ्लैट में कैसा सूनापन (तोस्क्लिवो) है!

वादिम: पता है, दूध (मोलोचिश्को) तो कमाना (ज़ाराबोतात) अभी भी मुमकिन है। गाय रखना ज़रूरी नहीं।

नीना: सब सही है। लेकिन मुझे इतना बुरा (पोगानो) क्यों लग रहा है, है न?

वादिम: (मुस्कान के साथ, गले में) तुम औरतों को कौन समझे (पोयम्योत)?

नीना: और तुम कात्या को फिर से (स्नोवा) नहीं छोड़ोगे?

वादिम: तुम क्या कह रही हो? मैंने इस समय में इतना कुछ समझ लिया है! ऐसा प्यार कौन छोड़ता है?

नीना: तुम आदमियों को कौन जाने? दाढ़ी (सेदिना) में बाल, और शैतान (बेस) पसली (रेब्रो) में!

वादिम: लगता है, मेरे शैतान मर (स्दोख्ली) गए हैं! मैं सेवानिवृत्ति (व्होज़्हु व तिराझ़) हो रहा हूँ, निनोच्का! लगता है, कात्या के अलावा किसी और को मेरी ज़रूरत नहीं!

नीना: दिखावा (प्रिबेद्न्यायस) मत करो!

वादिम: और पहले भी, शायद, किसी को ज़रूरत नहीं थी, बस यह समझ नहीं पाया!

नीना: अरे! औरतें तुम्हें चैन (प्रोखोदु) नहीं देती थीं, और तुम भी उन्हें नहीं छोड़ते थे! मैं, पता है, तुम पर कितनी मरती (सोख्ला) थी! रात को रोती थी, – सब वैसे ही, जैसा होना चाहिए (काक पोलोज़्हेनो)!

वादिम: धन्यवाद! (उसके चेहरे पर हाथ फेरता है) और अब?

नीना: नहीं बताऊँगी!

वादिम: (सोच में) और नास्त्या, मतलब, सेनेटोरियम में है?

नीना: सेनेटोरियम में।

वादिम: और कैसा है?

नीना: क्या कैसा? आखिरी (पोस्लेद्नी) टेस्ट (एनालिज़ी) अच्छे (खोरोशीये) हैं। मुँह न लगे (त्योफु, त्योफु), कहीं नज़र (स्ग्लाज़ित) न लग जाए! मुझे ऐसा लगता है कि हमारी बुर्योन्का के दूध (मोलोका) ने उसे बहुत फायदा (ज़्दोरोवो) पहुँचाया है!

वादिम: (अन्यमनस्क (रास्सेयान्नो) होकर) बेशक, बेशक... मैं ये कह रहा हूँ... कात्या अकेली (ओदना) रहना चाहती है...

नीना: (उठती है) मैं अपने घर (वोस्वोयासी) जाती हूँ!

वादिम: (भी उठता है) शायद... तुम आमंत्रित (प्रिग्लासिश) करो?.. कात्या को, सिद्धांततः (व प्रिन्त्सिपे), आराम (पोकोय) चाहिए... मैं यहाँ क्यों हूँ? (गलती से बंदूक से टकराता है, जो दीवार के सहारे रखी है, वह गिर जाती है) यह बंदूक हमेशा पैरों (पोद नोगामी) के नीचे आती है, भगवान करे (च्योर्त बी येयो पोब्राल)! मैं इसे जगह पर रखूँगा और साथ में देखूँगा कि कात्या क्या कर रही है। (बंदूक लेता है, पैरों की उँगलियों (ना त्सिपोच्काह) पर शयनकक्ष में ले जाता है और वापस आता है) पूरी तरह बेहोश (ओत्क्ल्युच्के) है! मुझे खुद भी तनाव (स्त्रेस) है! पुरानी याद (स्टारोय पाम्याति) के तहत आमंत्रित करो!

नीना: (घबराहट (ज़ामेशातेलस्त्वे) में, उत्तेजित (वोल्नुएत्स्या) होकर) अरे मेरे यहाँ सफाई (प्रिब्रानो) नहीं है... बिस्तर (पोस्तेल) नहीं बना है और... बिल्कुल... असुविधाजनक (नेउदोब्नो) है!

वादिम: (बीच में बोलता है, आवाज़ में अधीरता (नोट्की नेतेर्पेनिया) है) रस्म-रिवाज़ (त्सेरेमोनी) का समय नहीं... चलो! (नीना को गले लगाता है)

नीना: (उत्तेजित होकर) तुम क्या कर रहे हो? क्यों?

वादिम: अच्छा?

नीना: अरे, मुझे इतना बुरा (पोगानो) क्यों लग रहा है, इतना बुरा? है न? कुछ गड़बड़ (ने तो) है, है न? कुछ ठीक (ने ताक) नहीं है, है न? है न?

समाप्त (कोनेत्स)